मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष:3 । अंक:16 । पृष्ठ:44 । मूल्य:निःशुल्क । इंदौर–उज्जैन । बुधवार 1 नवम्बर 2023 । कार्तिक मास/अगहन (मार्गशीर्ष) (9), विक्रम संवत् 2080 । इ.संस्करण

दीप धरा पर जल रहा,
देह धाम के द्वार।
अंतस में अध्यात्म का,
आलोकित संसार।।

–योगी शिवनन्दन नाथ

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

• गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
• पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
• समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	करवा चौथ में चाँद को छलनी...	सोनल मंजू श्री ओमर	05
3	पंच पर्व पूजन धनतेरस	डॉ. अर्चना प्रकाश	08
4	आलोक पर्व दीपावली	सुजाता प्रसाद	09
5	ज्ञान का दीप जलाएं	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	11
6	दीये तुम जलते रहना	भावना दामले	12
7	पर्यावरण चिन्तन 10	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	13
8	मानवता के समग्र गुणों का...	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	14
9	सफलता का गीत	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	15
10	समृद्ध राष्ट्र के लिए बाल...	आकांक्षा यादव	17
11	केरलियों का वृश्चिकोत्सव...	डॉ. षैजू के	21
12	विश्व दृष्टि दिवस	रीता रानी	24
13	ॐ का रहस्य	डॉ. अर्चना प्रकाश	26
14	बाल गंगाधर तिलक और...	डॉ. सन्तोष खन्ना	28
15	संत नामदेव	मंजिरी 'निधि'	32
16	शिव का सती परित्याग	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	33
17	वैयक्तिक व मानसिक रूप से...	कृष्ण कुमार यादव	34
18	रिश्तों की नाजुक डोर को...	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	36
19	गौ माता अन्नपूर्णा, जीवन का...	डॉ. पूनम माटिया	38
20	लोक संस्कृति में बालिकाओं का...	डॉ. शारदा मेहता	39
21	सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण...	डॉ. अजय शुक्ला	41
22	कलयुगी विभीषण	अंकुर सिंह	44

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

ॐ विश्वानि देव सावितदुरितानि परासुव ।
यतभद्रम तन्न आ सुव।। (यजुर्वेद 30/3)

अध्यात्म संदेश परिवार के सभी विद्वतजनों को नमोनमः

ईश्वर की कृपा से खेल मंत्रालय का नारा 'अबकी बार सौ के पार' वास्तव में हकीकत में बदल गया। चाइना में हुए एशियन गेम्स में भारतीय खिलाड़ियों के ऊपर बरसने वाले पदकों की खनक समूचे विश्व ने सुनी। इससे पहले इतने पदको को वर्षा नही हुई थी।

यही नही विश्व कप क्रिकेट मैच में पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया पर भारत की शानदार विजय ने दर्शकों के जनमानस को हर्षातिरेक के कारण इतना भाव विभोर कर दिया कि सारा स्टेडियम वन्दे मातरम के स्वर से गूँज उठा। यह कोई साधारण दृश्य नही था। यह एक ऐतिहासिक घटना होने के साथ साथ माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के कुशल नेतृत्व की एक झलक थी।

दो देशों के बीच चलने वाले युद्ध मे जहाँ हिंसा मानवता पर दिनों दिन भारी पड़ रही है। वहीं यह संदेश भी विश्व विदित हो गया है कि भारतीय संस्कृति के प्राचीन मूल्य अहिंसा परमो धर्मः वास्तव में वर्तमान परिपेक्ष्य में कितने प्रासंगिक है। यदि मानवता को बचाना है तो विश्व को इन मूल्यों को अपनाना होगा।

भारतीय संस्कृति मे धार्मिक उत्सवों व पर्वो का बड़ा महत्व है। उत्सव एक ओर जीवन की एकरसता को दूर करते है। तो दूसरी ओर हमे हमारी संस्कृति से जोड़ते हुए दैनिक जीवन की भागदौड़ से क्लांत मन के लिए एक सुखद समीर के झोके से कम नही होते। नवंबर के आगमन के साथ ही मौसम ने अचानक करवट ली और हल्की गुलाबी ठंड ने भी दस्तक दे दी है।

नवम्बर मास अपने साथ त्यौहारों की समृद्ध श्रृंखला लेकर आता है। इस कारण जनमानस का मन इस विषय मे सोचकर ही प्रफुल्लित रहता है। ऊपर से मासों में सर्वोत्तम कार्तिक मास होने से इस महीने के त्यौहारों का महत्व द्विगुणित हो उठता है।
इस बार नवंबर मास का प्रारंभ ही मुख्य पर्व से हो रहा है।

1 नवंबर 'करवा चौथ' का मुख्य पर्व है। जिसमे सभी सुहागिन स्त्रियाँ पूरे दिन निर्जल उपवास रखकर अपने पति की दीर्घायु के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है यह त्यौहार उत्तर भारत मे धूमधाम से मनाया जाता है।

5 नवंबर अहोई अष्टमी का पर्व है प्रत्येक माता के लिए उसकी संतान ही इसका सबसे बड़ा धन होती है। अतः प्रत्येक स्त्री उपवास रखकर अपनी संतान की कुशलता व दीर्घायु के लिए भगवान से प्रार्थना करती है।

10 नवंबर धनतेरस का पर्व मनाया जाएगा। माना जाता है इस दिन देवताओं के वैद्य भगवान धन्वंतरि की उत्पत्ति होने के कारण धनत्रयोदशी को बहुत ही शुभ माना जाता है। लोग यथा सामर्थ्य सोना चांदी पीतल या अन्य धातुओं की वस्तुओं की खरीददारी करते है।

12 नवम्बर को हिंदुओ का प्रसिद्ध त्यौहार दीपावली मनाया जाएगा। भगवान राम के देवी सीता, लक्ष्मण सहित 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर वापस अयोध्या लौटने के उपलक्ष्य में यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन गणेश लक्ष्मी जी की विशेष रूप से पूजा की जाती है। दीपावली का पर्व हर्षोल्लास के पर्व होने के साथ साथ एक महत्वपूर्ण संदेश भी जनमानस को देता है। कि विपत्तियों की रात कितनी भी लंबी क्यों न हो सवेरा जरूर होता है ।

इस बार 13 नवंबर को सोमवती अमावस्या का पर्व है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सोमवार को होने वाली अमावस्या सोमवती अमावस्या के नाम से जानी जाती है। इस दिन भगवान शिव की उपासना, अपने पितरो के निमित्त दान ,तर्पण का विशेष महत्व होता है।

15 नवंबर भाई -बहन के प्रेम का प्रतीक भाईदूज का पर्व मनाया जाएगा जिसे यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। भाईदूज का पर्व हमेशा बहन को यही एहसास दिलाता है। वह कभी भी भाई से दूर नही है। भाई हर समय हर परिस्थिति में उसके साथ खड़ा है।

21 नवम्बर को अक्षय नवमी का पर्व मनाया जाएगा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार- कार्तिक नवमी से लेकर पूर्णिमा तक विष्णु भगवान का पूजन विशेष लगभकारी होता है। नवमी के दिन आँवले की पूजा, भजन, पूजन, स्नान, दान का अक्षय फल प्राप्त होता है।

24 नवम्बर मुगलो द्वारा किये गए जबरन धर्मांतरण के खिलाफ डटकर खड़े होने वाले गुरु तेग बहादुर (सिखों के नौंवे गुरु) की पुण्य तिथि को शहीद दिवस के रूप मे मनाया जाता। गुरु तेग बहादुर उत्कट योद्ध, विचारक, कवि थे। उन्होंने 115 काव्य भजनों से युक्त पवित्र ग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' की रचना की थी ।

27 नवंबर को त्रिपुरारी पूर्णिमा के जानी जाने वाली कार्तिक पूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा भगवान शिव ने राक्षस त्रिपुरासुर पर विजय प्राप्त की थी और इसी दिन विष्णु भगवान ने मत्स्य अवतार लिया था अतः इस दिन विष्णु भगवान की विशेष पूजा होती है ।

विभिन्न पर्वो की रोचक जानकारी से भरपूर अध्यात्म संदेश पत्रिका का नवंबर मास का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम अति हर्षित है ।

सभी सहयोगी विद्वानों का अतिशय आभार ,जिनके रोचक लेखों के सहयोग से अध्यात्म संदेश पत्रिका की यात्रा अनवरत गतिशील है। आध्यात्म संदेश पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। आशा है पत्रिका के प्रति आपका स्नेह उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

सभी सुधी पाठकों को दीपावली पर्व की असीम शुभकामनाओ सहित -

संपादक

-डॉ. अलका शर्मा

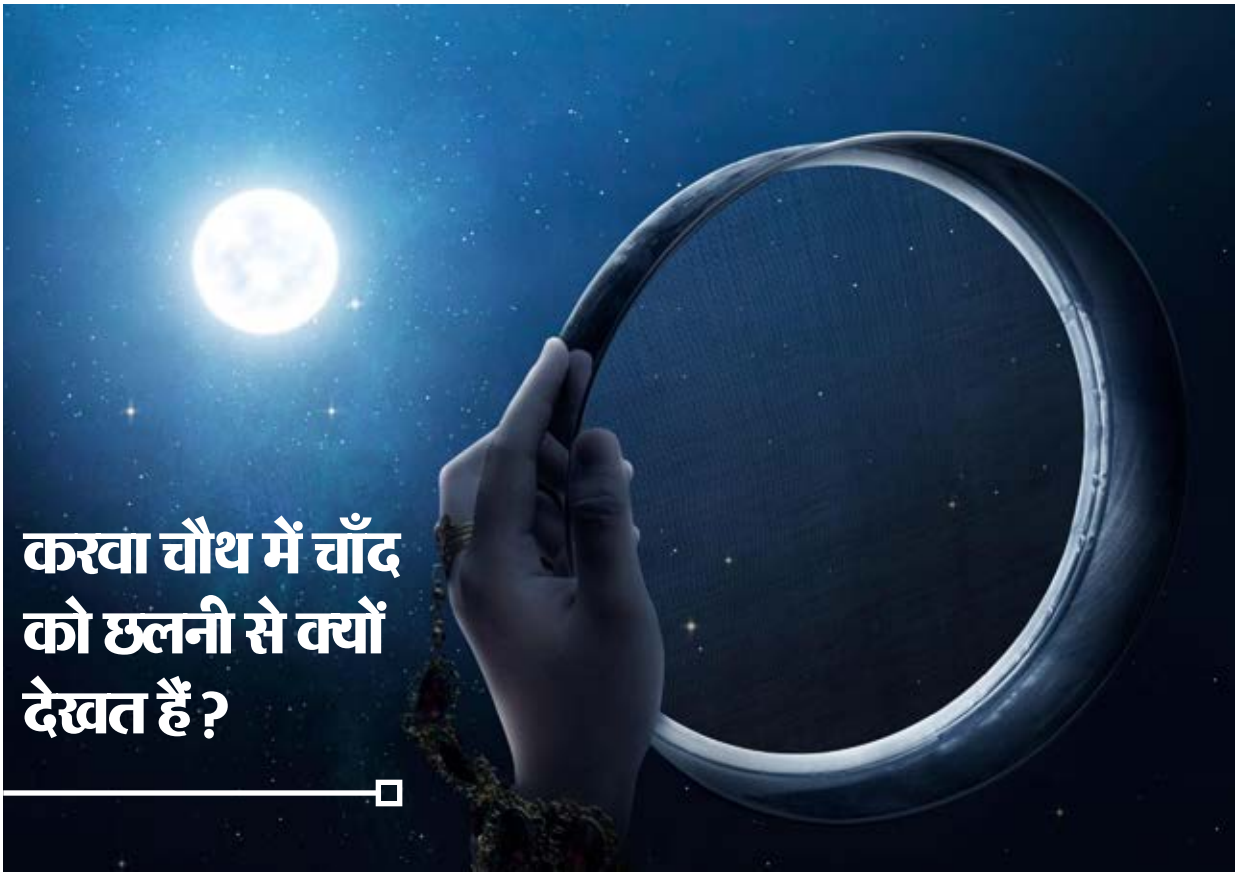

करवा चौथ में चाँद को छलनी से क्यों देखत हैं?

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात

हिन्दू धर्म में अनेक त्यौहार हैं, जिन्हें भक्त, पूरे श्रद्धाभाव के साथ मनाते हैं। हर एक त्यौहार को मनाने एवं पूजने की विधि अलग होती है, जिसका नियमानुसार पालनकर, भक्त उस त्यौहार को संपन्न करते हैं। इन्हीं में से एक त्यौहार है, करवा चौथ। हिन्दू धर्म में करवा चौथ व्रत का विशेष महत्व माना गया है। इस दिन सुहागिन महिलाएं, अपने पति की लंबी आयु और सुखी जीवन के लिए व्रत रखती हैं।

यह व्रत सुहागिन महिलाओं के लिए सबसे अहम व्रत माना जाता है। करवा चौथ के दिन, महिलाएं बड़े ही श्रद्धा भाव से शिव–पार्वती की पूजा करती हैं। इस दिन व्रत में भगवान शिव, माता पार्वती, कार्तिकेय जी और गणेश जी के साथ–साथ, चन्द्रमा की भी पूजा कर, चन्द्रमा को महिलाएं, छलनी में से देखती हैं और फिर उसी छलनी में से देखा जाता है पति का चेहरा। लेकिन, अक्सर यह सवाल मन में उठता रहता है कि, आखिर इस परपंरा के पीछे कारण क्या है? चन्द्रमा को छलनी से देखने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। लेकिन इस प्रथा का महत्व क्या है चलिए बताते हैं....कहते है भविष्य पुराण में लिखा है कि चौथ का चाँद देखना वर्जित (मना) होता है। चौथ का चाँद देखने से मिथ्या आरोप लग सकता है या फिर कहें कि कोई झूठा आरोप लग सकता है। वहीं करवा चौथ भी चौथ की ही तिथि है। यही कारण है कि चाँद को इस दिन खाली देखने की बजाए किसी वस्तु का इस्तेमाल करके (छलनी की ओट से) देखा जाता है।

ये भी माना जाता है कि जब महिलाएं चाँद को देखती हैं और फिर पति के चेहरे को छलनी में दीपक रखकर देखती हैं, तो उससे निकलने वाला प्रकाश सभी बुरी नजरों को दूर करता है। साथ ही जब दीपक की पवित्र रोशनी साथी के चेहरे पर पड़ती है तो पति–पत्नी के रिश्ते में सुधार आता है।

हर साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन नई छलनी में से ही चाँद देखना चाहिए। जिससे किसी तरह का छल ना हो और करवा माता, व्रती महिला के, विधि–विधान से किए गए व्रत को स्वीकार करें।

करवा चौथ, मुख्य पर्वों में से एक है, जिसका इंतजार हर वर्ष, महिलाएं बड़ी बेसब्री से करती हैं और अपने पति की लम्बी आयु के लिए, पूरे रीति–रिवाजों के साथ, करवा चौथ के व्रत को संपन्न करती हैं।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन

की जिला इकाइयों के द्वारा आयोजित सामाजिक सेवा कार्यक्रमों की झलकियां

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन के जिला मुजफ्फरनगर के अध्यक्ष, श्री पंकज त्यागी, सभी सम्मानित पदाधिकारीगण एवं, कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा मुजफ्फरनगर रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता पखवाड़ा दिवस पर स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन

की जिला इकाइयों के द्वारा आयोजित सामाजिक सेवा कार्यक्रमों की झलकियां

बिलासपुर (छत्तीसगढ़) की मंडल अध्यक्ष डॉ. अलका यादव, जिला अध्यक्ष मोना केवट जी एवं सम्मानित समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा गौ सेवा एवं जल पात्रों का वितरण किया गया।

लखनऊ (उ.प्र.) फाउण्डेशन की जिला अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रकाश एवं उनकी टीम द्वारा आसपास की सोसाइटी में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम।

पंच पर्व पूजन धनतेरस

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

त्योहार अनोखा पंच पर्व का,
संस्कृति संस्कारो पर गर्व का।
धनतेरस धन्वन्तरि आवै,
आरोग्य सम्पदा वर्षावै।
पात्र अनोखा नूतन लाएं,
प्रसाद उसमें भर भर पाएं।
नर्क चतुर्दशी है पर्व दूसरा,
सकल अशुद्धि दूर भगाएं,
द्वारे स्वागत दीप जलाएं।
अमावस की तिथि न्यारी,
तमस निशा पर दीप भारी।
विजय पर्व की गूंज दिवाली
रघुवर कृपा सद्भाव सुनामी।
अल्पनाओं की अजब अदा,
लक्ष्मी गणेश की वरद कृपा।
गोवर्धन के भाव भी निराले,
गौ गोबर के गोवर्धन द्वार धरे।
दीपक मुकुट सा शीश रहे,
भाई दूज यम द्वितीया आये।
भ्राता हित बहने यम को पूजे,
आशीष अनेको भाई के मांगे।
अहोई पूजन अष्टमी तिथि को,
गौरी पूजन मेला कतकी को।
तिथि एकादश वृंदा मैया की,
सालिग्राम संग ब्याह रचाये।
सुभाग सुहागिनों पर बरसाए,
गंगा स्नान से पुण्य भी पाए।
धनतेरस से कार्तिक पूनो तक,
पँचपर्व त्योहार विविधताओं के।
धर्म कर्म परलोक सँवारे,
त्योहारों से संस्कृति सँवारे।

गोवर्धन पूजा अन्नकूट महोत्सव

अध्यात्म संदेश (डेस्क)

द्वापर युग से गोवर्धन पूजा और अन्नकूट महोत्सव मनाने की परंपरा चली आ रही है। दीपावली के दूसरे दिन, उत्तर एवं मध्य भारत में गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट महोत्सव हर्षोल्लाह से मनाया जाता है। इस पर्व के पीछे भगवान श्री कृष्ण का प्रकृति प्रेम का एक विशेष संदेश छिपा है।

इस दिन गाय के गोबर से गोवर्धन की आकृति निर्मित कर परिवारों में श्री कृष्ण भगवान की पूजा अर्चना की जाती है गाय का गोबर हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माना जाता है इसीलिए इसमें लक्ष्मी का निवास माना गया है पूर्ण निष्ठा के साथ इस दिन गोवर्धन की पूजा करने से परिवार में सुख समृद्धि वैभव का आगमन होता है। इसी पर्व को अन्नकूट महोत्सव भी कहा जाता है।

किसान परिवार भी इस दिन नये अनाज का भगवान को भोग लगाते हैं। परिवारों में 56 प्रकार के व्यंजनों को बनाकर भगवान श्री कृष्ण को अर्पित करते हैं। इसी दिन गाय माता को स्नान करा कर, फूल माला पहनकर, तिलक लगाकर, धूप दीप से उनकी आरती की जाती है, परिक्रमा की जाती है। यह पूजा परिवार में दीर्घायु, समृद्धि एवं आरोग्यवर्धक मानी जाती है।

आलोक पर्व दीपावली

सुजाता प्रसाद
लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

दीपावली का पर्व कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है। भारत में होने वाले अनेक त्योहारों में दीपावली का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। दीपावली के साथ हमारा भारतीय समाज प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है और इसकी महत्ता आज भी बनी हुई है। दीपावली क्यों मनाई जाती है, इस पावन पर्व मनाने की प्रथा का मूल क्या है? हमारे मस्तिष्क में ऐसे प्रश्न भी आते हैं। अगर हम ऐतिहासिक रूप से देखें तो भारत कृषि प्रधान देश है। आज से हजारों वर्ष पहले इस दीपोत्सव का प्रचलन ऋतु पर्व के रूप में शुरू हुआ था। क्योंकि इस समय तक शारदीय फसल, विशेषकर चावल की बालियां पककर घरों में आ जाती थी। घर अन्न भंडार और धन–धान्य से भर जाते थे। वहीं रुई कपास जैसे व्यवसायिक फसल के तैयार हो जाने से वर्ष भर के लिए वस्त्रों के प्रबंध हो जाने की पूर्ण संभावना बन जाती थी। इसलिए जन मानस के हृदय में उल्लास और उत्साह का संचार होता था, आनंद की इस स्थिति में भावविभोर होकर ईश्वर को अपना आभार व्यक्त करने के लिए दीपावली पर्व को मनाना प्रारंभ किया गया। कालांतर में जैसे–जैसे समय बीतता गया अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं दीपावली से जुड़ती चली गई। पौराणिक ग्रंथों में दीपावली के संबंध में अनेक विवरण मिलते हैं। स्कंध पुराण, पद्मपुराण, भविष्य पुराण में इस पर्व के संबंध में कई मान्यताएं मिलती हैं।

आइए जानते हैं इससे संबंधित कुछ तथ्य– जैसे महाराज पृथु द्वारा अन्न धन की प्रचुर उपलब्धि और धन प्राप्ति के साधनों के नवीकरण द्वारा उत्पादन शक्ति में विशेष वृद्धि होने के बाद भारत को समृद्ध तथा सुखी बना देने की खुशी के उपलक्ष्य में दीपों के प्रज्वलित करने का प्रचलन शुरू हुआ, ऐसा वर्णित है।

ऐसे ही आज के दिन समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी के अवतरित होने की प्रसन्नता के उपलक्ष्य में इस उत्सव को मनाए जाने का उल्लेख मिलता है।

एक और पौराणिक गाथा के अनुसार कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को दुष्ट अत्याचारी शासक नरकासुर का वध करने के बाद उसके बंदी गृह से अनेक राजाओं और सोलह हजार राज कन्याओं का उद्धार करने पर भगवान श्री कृष्ण का अभिनंदन करने के लिए भयमुक्त जनता ने चतुर्दशी के अगले दिन अमावस्या को दिवाली मनाई थी।

एक पौराणिक कथा के अनुसार, महाभारत के आदि पर्व में पांडवों के तेरह वर्ष के अज्ञात वनवास से लौटने पर प्रजा द्वारा उनके स्वागत में नगरों को सजाकर तथा दीपों की अवली प्रज्वलित कर उत्सव मनाने का भी उल्लेख मिलता होता है।

जन प्रचलित कथा के अनुसार भगवान श्रीराम के लंका विजय के बाद माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ चौदह वर्षों के कठिन वनवास पूरा होने के बाद अयोध्या नगरी को जन जन ने रंग बिरंगे पताकाओं से सजाकर, दीपों को प्रज्ज्वलित कर भगवान श्री राम का आनंद विभोर होकर स्वागत किया। उनके आगमन की खुशी में पूरी अयोध्या नगरी को दुल्हन की तरह सजाया गया था। खुशी के पर्व के रूप में धूमधाम से दीपावली मनाई गई थी। उसी स्वर्णिम पल को जीवन्त करने हेतु आज भी घर–घर में दीपक जला कर दीपावली का पर्व मनाया जाता है।

समस्त भारत में सनातन धर्म को मानने वाले इस आलोक पर्व को उल्लास और उत्साह के साथ मनाते हैं। हर तरफ एक नया उत्साह, नई उमंग, नई ऊर्जा, और प्रसन्नता का संसार बिखरा रहता है। पर्व के आने से लगभग एक माह पूर्व से साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है और लोग अपने घरों को सजाने संवारने में लग जाते हैं। अमावस्या की रात्रि को घरों को असंख्य दीपों की उज्जवल ज्योति से जगमगाया जाता है। सभी आनंद विभोर होकर भगवती मां लक्ष्मी की उपासना करते हैं और दीप आलोकित कर उनके आगमन की प्रार्थना करते हैं।

इस प्रकार दीपावली पर्व का एक उद्देश्य देश के स्वास्थ्य के प्रति भी सजग करना है। वर्षा ऋतु में धूप की कमी तथा शुद्ध जल के अभाव के कारण वायुमंडल में अनेक कीटाणु पनप जाते हैं। मच्छरों की अधिकता की इस ऋतु में ज्वर, मलेरिया आदि रोग विशेष रूप से फैलते हैं। कार्तिक ऋतु में, शरद ऋतु अपने पूर्ण विकास पर होती है। वहीं वातावरण में फैले हुए स्वास्थ्य को नुक्सान पहुंचाने वाली समस्याओं और कारणों को दूर करने में लोग अपने घरों की साफ सफाई करते हैं। निवास स्थान के प्रत्येक भाग को दीपों द्वारा आलोकित किया जाता है। दीपक का प्रकाश तथा उष्णता वर्षा जनित रोग और उससे पनपे कीटाणुओं के विनाश में कारगर सिद्ध होते हैं। इस प्रकार दीपावली का पर्व पर्यावरण को स्वच्छ रखने का संदेश भी देता है। जिससे घरों में सकारात्मक ऊर्जा का निवास रहता है।

दीपावली पूरे पांच दिन का सामाजिक और पारिवारिक त्योहार है क्योंकि यह पर्व त्रयोदशी से प्रारंभ होकर शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक मनाया जाता है।

त्रयोदशी को वैद्य धन्वंतरि का पूजन कर अपने परिवार, देश और देशवासियों के लिए स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना की जाती है। भगवान धनवंतरी मानव के अच्छे स्वास्थ्य और रोगों के निवारण के लिए अमृत कलश लिए हुए समुद्र मंथन से उत्पन्न हुए थे। उन्होंने संसार में आयुर्वेद विद्या का प्रचार प्रसार कर सभी प्राणियों पर बहुत बड़ा उपकार किया है। भगवान धन्वंतरि को भगवान विष्णु का अंशावतार माना जाता है। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी भगवान धनवंतरी का जयंती दिवस है, इसलिए इस दिन को धन्वंतरि त्रयोदशी भी कहते हैं। इस दिन शाम के पूजन के समय मुख्य द्वार पर तेल का दीपक जलाकर यमराज के निमित्त रखा जाता है।

धनतेरस का पर्व धन और आरोग्य से जुड़ा हुआ है। इसलिए धन के लिए इस दिन कुबेर की पूजा की जाती है और आरोग्य के लिए धनवन्तरि की पूजा की जाती है। इस दिन मूल्यवान धातुओं, नए बर्तनों और आभूषणों की खरीदारी का विधान होता है। धनतेरस पर वाहन, घर, संपत्ति, सोना, चांदी, बर्तन, कपड़े, धनिया, झाड़ू आदि खरीदने का महत्व है। इसलिए धनतेरस के दिन नए बर्तन, वाहन, आभूषण आदि खरीदने की भी परंपरा है।

धनतेरस के अगले दिन नरक चतुर्दशी या रुप चौदस का पर्व आता है जिसे छोटी दीवाली के रूप में मनाया जाता है। यह दिन राक्षस नरकासुर पर भगवान श्री कृष्ण की जीत की खुशी में मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्री कृष्ण की उपासना की जाती है। भारत की सांस्कृतिक परंपराएं वैज्ञानिकता के आधार पर मनाई जाती हैं। नरक चतुर्दशी के दिन भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध करके संसार को भयमुक्त किया था। इस प्रसन्नता को प्रकट करने के उपलक्ष्य में यह पर्व मनाया जाने लगा ऐसा पुराणों में उल्लेख मिलता है।

पर्व के तीसरे दिन को बड़ी दीपावली के रूप में मनाया जाता है। इस दिन सुख समृद्धि की देवी मां लक्ष्मी एवं बुद्धि और ज्ञान के देव श्री गणेश जी के पूजन अर्चन का विधान है। खुशी के इस उत्सव पर जगमग जगमग जलते हुए दीपक अंधकार को दूर कर जीवन में आशा एवं प्रसन्नता का संचार करते हैं। हमें सुखमय जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। इस दिन बच्चे बड़े सभी नए कपड़े पहनते हैं, पकवान और मिठाइयां खाते हैं और विभिन्न प्रकार की फुलझड़ी और पटाखे जला कर अपनी खुशियां मनाते हैं।

दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन के अतिरिक्त व्यापारी वर्ग द्वारा अपने बही खातों में आय–व्यय रजिस्टर इत्यादि के पूजन की भी प्रथा है। भारतीय अर्थ व्यवस्था की पद्धति के अनुसार यह

हमारे आर्थिक वर्ष का प्रथम दिन होता है। इस दिन वे अपने पिछले वर्ष के समस्त आय व्यय तथा हानि लाभ आदि का गंभीरतापूर्वक निरीक्षण करते हैं और भविष्य के लिए महत्वपूर्ण निर्णय भी लेते हैं। इस प्रकार कह सकते हैं यह पावन पर्व आर्थिक प्रगति के निरीक्षण का भी दिन है।

दीपावली पर्व की श्रृंखला में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को चौथे दिन गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है, इस दिन को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है। इस पर्व में विभिन्न तरह के व्यंजन बनाकर भगवान श्री कृष्ण को समर्पित किये जाते हैं। वर्णित मान्यताओं के अनुसार ऐसा भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत की तलहटी में रहने वाले ब्रज के निवासियों के उद्धार और कृषि संसाधनों के नवीनीकरण के उद्देश्य से हुआ था। इस पर्व के प्रारंभ होने से पहले ब्रजवासी देव आधारित थे। अन्न उपजाने के लिए वे सिर्फ वर्षा पर निर्भर रहते थे। ऐसे में वृष्टि, अतिवृष्टि और अनावृष्टि सभी परिस्थितियों में वहां की जनता इंद्र की उपासना किया करती थी। मान्यता है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण गोकुल वासियों की क्रोधित देवराज इंद्र के द्वारा की गई भयंकर बारिश से रक्षा करने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उंगली पर उठाकर सात दिनों तक बारिश का सामना करते रहे थे। अंततः इंद्र को हार मानकर बारिश बंद करनी पड़ी। अतः यह पर्व अहंकार पर श्रद्धा एवं विश्वास की विजय के रूप में मनाया जाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गोवर्धन पूजा जैसे पर्वो की अत्यंत आवश्यकता है। इस दिन हमें अपने राष्ट्र की पृथ्वी और गाय दोनों की रक्षा करना चाहिए। इनकी उन्नति के लिए इनका संवर्धन करना चाहिए और हमें हमेशा इनके संरक्षण के लिए संकल्प लेना चाहिए। दीपावली के पांचवें दिन भाई–बहन के प्रेम के बन्धन को समर्पित भाई दूज का पर्व मनाया जाता है, इस दिन बहनें अपने भाइयों को टीका करती हैं, आरती उतारती हैं और उनके सुख समृद्धि की कामना करती हैं। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाने वाला पर्व भ्रातृ द्वितीय या भैया दूज के नाम से जाना जाता है। यह हिंदू समाज का एक आदर्श पारिवारिक पर्व है। इस दिन का मुख्य महत्व मृत्यु के देवता यमराज और उनकी बहन यमुना नदी के प्रेम की कहानी है। पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन भगवान यम अपनी बहन यमुना के यहां मिलने जाया करते हैं और उन्हीं के अनुकरण पर इस दिन भाई अपनी बहनों से मिलते हैं और उनकी इच्छानुसार सम्मान पूजा आदि करके उनसे आशीर्वाद रूप में माथे पर तिलक करवाते हैं। कहा जाता है ऐसा करने से मृत्यु भय नहीं रहता है।

इसके बाद पांच दिवसीय इस महान पर्व का समापन हो जाता है। आलोक पर्व दीपावली वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता का संगम है। दीपावली प्रेम, एकता एवं सौहार्द का संदेश देती है साथ ही सम्पूर्ण समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर जाने और एकजुट होकर साथ रहने की प्रेरणा देती है।

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आओ हम समवेत रूप से ज्ञान का दीप जलाएं ।
सदा सदा के लिए अंधेरा पृथ्वीतल से दूर भगाएं।।
दीप्ति दिए की दीपित लौ को दिग्दिगंत फैलाएं ।
वसुंधरा पर सृजित सृष्टि को ज्योतिर्मयी बनाएं ।।
जन मन भसित करने को संकल्पित हो जाएं।
अन्धकारमय मानस के हम सारे तिमिर मिटाएं ।।
तम हर परम प्रकाश पुंज का मंगल दीप सजाएं।
अन्धकार तम नाशक दिव्या ज्योति प्रभा दर्शाएं ।।
अमानिशावत अन्धकार को आओ चलें हटाएं ।
परमालोकित ज्ञानराशि का जग को भान कराएं।।
गृह गृह मृदा दीपिका पुंजित स्वर्ण रश्मियां छाएं।
जगमग दीप जलें घर आंगन हर्षित जन हो जाएं ।।
कुंभकारके हाथों निर्मित दीपोंको प्रज्वलित कराएं।
श्रीगणेशलक्ष्मी पूजन से जीवनअपना धन्य बनाएं।।
मंगलमय प्रभु शुभाशीष से सब मिलि हिय हर्षाएं।
बंधु बांधव स्वजनों के संग मृद् शंखों को गुंजाएं।।
झाले माले फूल फुलझरी सभी स्वदेशी सजवाएं।
सबके हित सबके विकास में अपना हाथ बटाएं ।।
गृह निर्मित मीठे व्यंजन गणपति को भोग लगाएं।
प्रेमभावआपूरित हमसब दीपावलि का पर्व मनाएं।।

दीये तुम जलते रहना

भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

हे दीये तुम जलते रहना
अमावस की काली रात में
अपनी आभा से चमकते रहना
हे दीये तुम जलते रहना।

मत घबराना तुम कभी आँधियों से
मत डरना कभी तूफानों से
निडरता से सबका मुकाबला करते रहना
हे दीये तुम जलते रहना।

माना कि जीवन का सफर है कठिन
फिर भी उम्मीद की प्रकाश किरण
सबके मन में प्रज्वलित रखना
हे दीये तुम जलते रहना।

इस बहुत सुन्दर संसार के लिए
इस खूबसूरत जिंदगी के लिए
जन – जन के मन को आनंदित करना
हे दीये तुम जलते रहना।

निराशा के अन्धकार को मिटाने हेतू
एक दीप आशा का काफी होता है
इस आस दीप की रोशनी बनाये रखना
हे दीये तुम जलते रहना।

अपनी पूर्ण शक्ति से चमकते रहना
अपनी पूर्ण ऊर्जा से प्रकाश देकर
जन – जन के मन को आलोकित करना
हे दीये तुम जलते रहना।

अपनी राह से भटके हुए राही को
अच्छी और सही राह पर बताना
कमजोरियों से लड़ने की शक्ति देते रहना
हे दीये तुम जलते रहना।

एक दीया ही बहुत होता है
अंधकार की मिटा देने के लिए
अंधकार को दूर करने की प्रेरणा देते रहना
हे दीये तुम सदैव जलते ही रहना।

पूरे प्राण पन के साथ
पूरी आस्था के साथ
सबका पथ आलोकित करते रहना
सबके मन को आनंद से भरते रहना

हे दीये तुम जलते रहना।
हे दीये तुम जलते ही रहना।।

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 10

धूप–हवा और पानी को मुठ्ठी में बंद करके रखना शायद आसान नहीं,बल्कि असम्भव है। फिर भी इस धरती पर कुछ लोग ऐसे हैं,जो इन्हें अपनी निजी सम्पत्ति की संज्ञा देकर, लोभ–स्वार्थ की तराजू पर तौलकर व्यापार करने की बात सोचने लगे। पानी को मुठ्ठी में बाँधे रखना सम्भव था, किन्तु बोतलों में बंद करके बेचने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई। फिर कुछ दिन बाद हवा को सिलेंडरों में कैद कर बाजार में लाने की तैयारी चलने लगी। कहा गया है कि 'आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है', वैज्ञानिक ने धूप को पकड़कर रखना भी आसान बना दिया। धूप से सौर–ऊर्जा उत्पादन का तकनीकी विकसित हो गई।

देखते–देखते ये तीनों प्रकृति–प्रदत्त,अमृत–सदृश पदार्थों के साथ खिलवाड़ करने वालों की भीड़ जमने लगी। वाणिज्य–लिप्सा रखने वाले कुछ लोग इन तीनों को प्रदूषित करने का घृणित कार्य अपना चुके हैं। जिससे प्रदूषण की विकरालता दिन–दुनी, रात–चगुनी फैलती जा रही है। प्रतिस्पर्धा का वीभत्स रूप युद्ध ही होता है।

युद्ध से घोर प्रदूषण फैलता है, और स्वच्छ पर्यावरण नष्ट होता है। इसका दृष्टिगत प्रमाण 'रामायण' और 'महाभारत' में मिला है। युद्ध के कारण धरती रक्त की धारा, आकाश में शोर,धूल और धुँआ के कलुषित आच्छादन के निर्मूलन हेतु भगवान इन्द्र वर्षा करने का आग्रह किया था ताकि प्रदूषित धरती –आकाश की स्वच्छता और पवित्रता का पुनरूस्थापन हो। किन्तु आज के युद्ध में भगवान इन्द्र कौन दिखता? युद्ध वर्चस्व और अस्तित्व दोनों के लिये लड़ा जाता रहा है। आज भी जो युद्ध हो रहा है, वह केवल वर्चस्व के लिये रेखांकित हुआ है लेकिन सबल वर्चस्व के उत्कर्ष और निर्बल अस्तित्व के रक्षार्थ हेतु भी कुछ आवाजें उठ रहीं हैं। एक बात बहुत स्पष्ट है कि वर्चस्व के युद्ध में क्रूरता और निर्ममता अधिक होती है, फलतः वातावरण विषाक्त और वीभत्स हो जाता है। वहीं अस्तित्व की रक्षार्थ लड़े जाने वाले युद्ध में करुणा और सहाय्य–बोध उजागर होता है। दोनों स्थितियों में युद्ध वैचारिक–प्रदूषण का दुष्परिणाम ही माना जायेगा।

चिन्तन–क्रम में युद्ध और पर्यावरण को लेकर कुछ पुराने आँकड़ों का अवलोकन आवश्यक प्रतीत होता है। बीसवीं सदी के अन्तिम चरण में खाड़ी–युद्ध से पर्यावरण को जितनी क्षति हुई, उसकी पूर्ति क्या सम्भव हो सका? जलचर और नभचर जीवों को जितना विनाश हुआ उसका आकलन अभी तक अपूर्ण रहा है। ज्ञातव्य है कि तैलिक जहर से सागरों का जल विषाक्त हो गया था। उसके जलवाष्प से बना बादल आम्लिक वर्षा करने को मजबूर रहा। इसका प्रतिकूल असर धरती की हरियाली और ऋषि पर अधिक रहा। जैव–युद्ध, जो परमाणु–युद्ध से भी अधिक खतरनाक होता है, का बिगुल बज उठा। इसकी एक पूर्व झलक वर्ष 1979 में सोवियत संघ की एक सैनिक प्रयोग शाला में देखी गई थी। उस समय चीन भी पीछे नहीं था। इस युद्ध में शस्त्रों द्वारा रोगाणुओं (वायरस) का छिड़काव किया जाता है। वायुमंडल और जलमंडल दोनों विषाक्त हो जाता है। हम धूप–हवा–पानी के माध्यम से इसे ग्रहण करने को मजबूर हो जायेंगे। अभी–अभी सारा विश्व कोरोना के गम्भीर प्रकोप से गुजर चुका हैं। चार साल बीत चुका, फिर भी जन सामान्य की स्थितियाँ दयनीय बनी हुई है। रह–रहकर उसका ज्वार उभरता ही रहता है। एक बात करीब स्थायित्व ले चुका है कि वर्तमान युग में युद्ध का दबाव कमेगा नहीं, बल्कि दिनों–दिन रफ्तार पकड़ता ही जायेगा। साथ ही एक सिद्धांत उभरा कि 'शस्त्रों से शास्त्र भी नष्ट हो सकता है, खासकर देश का आर्थिक–शास्त्र।'

युद्ध के पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन युद्ध के आधुनिकीकरण और इसके बढ़ते प्रभावों केन्द्रित है। आधुनिक युद्ध का तरीका विस्फोटक अधिक हो चला है। इसमें विध्वंस ही विध्वंस है। रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध से पर्यावरण पर व्यापक दुष्प्रभाव पड़ने की सम्भावना दीख रही है। वर्चस्व और अस्तित्व मुकाबला बहुत मंहगा पड़ेगा।

क्रमशः

मानवता के समग्र गुणों का प्रतीक 'दीपक'

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

भारत के कितने ही त्योहार–उत्सव मनाए जाते हैं, किंतु प्रकाश पर्व दीपावली ही एक ऐसा पर्व है, जो सम्पूर्ण देश में पूरे उमंग तथा धूमधाम के साथ मनाया जाता है। अक्सर देखा गया है कि इस मौके पर हम अपने घरों, प्रतिष्ठानों तथा अन्य स्थानों को जलते दीपकों की पंक्तियों में जगमगा देते हैं। विज्ञान के विकास के कारण आज भले ही रोशनी करने के लिए बिजली के बल्ब और सजावट के कई उपकरण मौजूद हों, फिर भी, दीपावली के मौके पर दीपक जलाने का अपना ही महत्व है। साधारण परिवारों में तथा धनाढय परिवारों में भी मिट्टी के दीपकों में सरसों के तेल में डूबी रुई की बत्तियां जलाने के पीछे बहुत बड़ा रहस्य है। परम्परागत रुप से तो हम दीपक जलाते ही आ रहे है, लेकिन दीपक जलाने तथा दीपक के विभिन्न अंगों के महत्व पर कदाचित् बहुत कम ही ध्यान दे पाए होंगे।

प्रकाश पर्व सदैव कार्तिक अमावस्या को ही आता है। अमावस्या की रात्रि का अंधकार इतना घनघोर होता है कि अच्छे–अच्छे दिग्गज घबरा उठें। वास्तव में अंधकार में ही तमाम पाप उत्पन्न होते हैं। इसलिए इसे पाप और अज्ञान का द्योतक माना गया है। दूसरी ओर, प्रकाश से अंधकार नष्ट होता है। इसलिए इसे पुण्य तथा ज्ञान का परिचायक माना गया है। प्रकाश पर्व मनाने के पीछे तमाम धर्मों और शास्त्रों में अलग–अलग कारण भले ही हों, लेकिन दीपक जलाने का रिवाज सबमें समान है। इसका यही वजह है कि दीपकों को प्रज्वलित करके हम पाप और अज्ञान के अंधकार का विनाश करने के लिए कोशिश करते हैं। दीपक एक सतोगुणी मानव का समग्र परिचायक माना जाने में इसके सभी अंगों का योगदान है। यदि हम सही ढंग से मंथन करें, तो लौ, बाती, तेल तथा दीपक ये समस्त अपना अलग–अलग महत्व रखते हैं।

उन्नति का परिचायक लौ :– जब भी हम दीपक जलाते हैं, तो उसकी लौ ऊपर उठने की कोशिश ही उन्नति का द्योतक है। ऊपर जाकर दीपक की लौ धुएं का, मलिनता का त्याग करती है। उन्नति की ओर उन्मुख होने पर अज्ञान तथा कालिमा खुद ही दूर भागने लगती है। दीपक की लौ ऊपर उठती है। संसार को प्रकाशमान करने के लिए लौ का ऊपर उठना उसकी खुद की भौतिक उन्नति तो है ही, साथ ही उसके द्वारा फैलाए गए प्रकाश से दूसरे व्यक्तियों का पथ भी आलोकित होता है। वह उसकी आत्मिक उन्नति भी है। मानव की उन्नति भी तभी कामयाब होती है जब वह दूसरों के लिए हितकारी हो। मात्र भौतिक उन्नति कर लेने में ही कोई बड़प्पन नहीं है। मानव को तभी प्रगतिशील कहा जा सकता है जब वह आत्मिक उन्नति करके खुद तो सुखी रहे ही, साथ ही दूसरे को भी सुख–सन्तोष प्रदत्त कर सके।

सदाचार की प्रतीक बाती :– दीपक में जलने वाली बाती रुई से बनती है। रुई का रंग सफेद होता है। सफेद रंग पवित्रता, सदाचार, ज्ञान और शक्ति का द्योतक माना गया है। यदि हम रुई के टुकड़े को जलाना चाहें, तो वह भप्प से जल जाएगा। बाती बनाने के लिए हमें रुई में बल देकर उसे खास आकृति देना पड़ता है। प्रतीकतः इन्द्रियों पर संयम रखकर ही मानव सदाचारी बनता है। बाती खुद जलकर संसार को प्रकाश प्रदत्त करती है तथा उसके अंधकार को अपने में समेट लेती है। बाती भोले शंकर से कम नहीं। भोले शंकर जग की भलाई के लिए हलाहल का पान करके नीलकंठ कहलाए, तो बाती संसार को आलोकित करने के लिए अपने नैसर्गिक सफेद वर्ण को छोड़कर काली पड़ने लगती है। बाती द्वारा दिए गए अनेक संदेशों पर अवलोकन करें, तो हम पाएंगे कि मनुष्य जीवन की सार्थकता भी त्याग, संयम और सदाचार में ही है।

स्नेह और नम्रता का परिचायक तेल :– दीपावली पर हम सरसों के तेल के दीपक जलाते हैं जो वातावरण को शुद्ध करते हैं और नुकसानदायक कीट–पतंगों को मारते हैं।

तेल का पर्यायवाची शब्द स्नेह अर्थात् तेल स्नेह का प्रतीक है। स्नेह वश ही वह बाती को जलाए रखने के लिए अपनी समस्त सामर्थ्य लगा देता है। स्नेह ही सबको अपना बना लेने की ताकत है। तेल तरल होता है तथा खुद को कहीं भी समायोजित कर लेता है। वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष नहीं करता। वातावरण के अनुकूल खुद को ढाल लेने में ही सफलता का रहस्य निहित है। जो व्यक्ति बात–बात में लड़ते–झगड़ते रहते हैं, उन्हें कोई पसंद नहीं करता। यदि हम तेल के द्वारा दिए गए संदेश को अपनाकर अपने को विनम्र रखें, तो सब हमारे अपने हो जाएंगे तथा हम जीवन में आने वाली समस्त कठिनाइयों को सुगमता से मुकाबला कर सकेंगे।

कोमलता का द्योतक पात्र :– मिट्टी का दीप तेल और बाती का आश्रय देकर उन्हें अनुशासित करता है। तेल को इधर–उधर बिखरने से रोकता है और बाती को उसके खास जगह पर नियंत्रित रखता है। यदि वह नियंत्रण में न हो, तो बाती हितकारी होने की जगह पर नुकसानदायक भी हो सकती है। मिट्टी अत्यंत कोमल होती है। कुम्हार उसे मनमुताबिक कोई भी आकृति दे सकता है। कोमलता बहुत बड़ा गुण है, जीवन में कामयाबी के लिए कोमलता होना बेहद जरुरी है।

मिट्टी, तेल, बाती, ये तीनों मिलकर ही लौ को जन्म देते हैं। लौ ऊर्जा का परिचायक है। जो व्यक्ति भी दीपक की तरह अर्जित कर सकता है। कोमलता, स्नेह और नम्रता होने पर ही मानव सदाचारी बनता है, इसलिए दीपक मानवता के समग्र गुणों का प्रतीक माना जाता है।

सफलता का गीत

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जे.एम.सी. महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

असफलता है एक चुनौती, मत तुम हाथ मलो।।
चलो उठो एक नई राह पर आगे बढ़े चलो।।

साहस लेकर,संग आत्मबल बढ़ना ही होगा
जो भी बाधाएँ राहों में,लड़ना ही होगा
काँटे ही तो फूलों का नित मोल बताते हैं
जो योद्धा हैं वे तूफाँ से नित भिड़ जाते हैं
मन में आशाओं को पालो,क्योंकर कभी खलो।
चलो उठो एक नई राह पर आगे बढ़े चलो।।

असफलता से मार्ग सफलता का मिल जाता है
सब कुछ होना, इक दिन हमको खुद छल जाता है
असफलता से एक नया,सूरज हरसाता है
रेगिस्तानों में मानव तो नित नीर बहाता है
साधो करमों को, गम से नही जलो।
चलो उठो एक नई राह पर चलो।।

भारी बोझ लिए देखो तुम, चींटी बढ़ती जाती है
एक गिलहरी हो छोटी पर, जिद पर अड़ती जाती है
हार मिलेगी, तभी जीत की राहें मिल पाएँगी
और सफलता की मोहक–सी बाँहें खिल पाएँगी
रहे दृढ़ सदा ही तुम टले से न टलो।
चलो उठो एक नई राह पर चलो।।

वृन्दावन की भूमि पर सारस्वत सम्मान

तृतीय
अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह

जनवरी 2024 | **वृन्दावन**

यह सम्मान राष्ट्र निर्माण एवं जनकल्याण को समर्पित हिंदी भाषी साहित्यकारों, शिक्षकों, चिकित्सकों, समाज–सेवकों, वैज्ञानिकों, लघु उद्यमियों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों, शोधार्थियों अथवा अन्य विधाओं की प्रतिभाओं को प्रदान किया जाएगा, जो अपनी प्रतिभा–सेवा के द्वारा राष्ट्र की शैक्षणिक, आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, कला एवं संस्कृति की उन्नति में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड– 2024

(आवेदक के लिए न्यूनतम आयु सीमा : 55 वर्ष)

यह अवार्ड विश्व में आध्यात्मिक योग ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की स्मृति का सम्मानित प्रतीक चिन्ह है। यह प्रतिष्ठित अवार्ड योग्य व्यक्तियों को सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है, जिन्होंने अपने जीवन में संबंधित कार्य क्षेत्रों में असाधारण योगदान देकर उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

सारस्वत सम्मान एवं लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्तकर्ताओं को फाउण्डेशन द्वारा आयोजित भव्य समारोह में उनके सम्मान के अनुरूप एक प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा ।

भारतवर्ष के समस्त प्रांतों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं | **प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर 2023**

For application form : Please type : "name" - "place" -"Award Name" and send it to 7415410516

मुख्य प्रायोजक

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

E-mail : award.gssfoundation@gmail.com

Website : www.gssfoundation.org

संपर्क सूत्र : योगी शिवनंदन नाथ | Ph. : 6266441148

14 नवंबर पर विशेष

बाल दिवस

समृद्ध राष्ट्र के लिए बाल अधिकारों के प्रति सजगता जरूरी

घरेलू हिंसा का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। जिन बच्चों ने घरेलू हिंसा में अपना जीवन बिताया है उनके मस्तिष्क का कॉर्पस कॉलोसम और हिप्पोकैम्पस नामक भागसिकुड़ जाता है, जिससे उनकी सीखने, संज्ञानात्मक क्षमता और भावनात्मक विनियमन की शक्ति प्रभावित हो जाती है। कई बार बच्चे अपने पिता से गुस्सैल व आक्रामक व्यवहार सीखते हैं। इस का असर ऐसे बच्चों का अन्य कमजोर बच्चों और पशु-पक्षियों के साथ हिंसा करते हुए देखा जा सकता है। इसी प्रकार बालिकाएँ नकारात्मक व्यवहार सीखती हैं और वे प्राय: दब्बू, चुप-चुप रहने वाली या परिस्थितियों से दूर भागने वाली बन जाती हैं।

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास नदेसर,
कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी

बचपन पर मंडराता अँधेरा : बचपन एक ऐसी अवस्था होती है, जहाँ जाति-धर्म-क्षेत्र कोई मायने नहीं रखते। बच्चे ही राष्ट्र की आत्मा हैं और इन्हीं पर अतीत को सहेज कर रखने की जिम्मेदारी भी है। बच्चों में ही राष्ट्र का वर्तमान रूख करवटें लेता है तो इन्हीं में भविष्य के अदृश्य बीज बोकर राष्ट्र को पल्लवित-पुष्पित किया जा सकता है। परन्तु जिस तरह से समाज में बच्चों के प्रति दुर्व्यवहार बढ़ रहा है, वह बेहद चिंताजनक है। बच्चों के साथ शारीरिक, मानसिक, यौनिक अथवा भावनात्मक स्तर पर किया जाने वाला दुर्व्यवहार बाल दुर्व्यवहार कहलाता है। हालाँकि हम बाल दुर्व्यवहार में सामान्यत: यौनिक एवं शारीरिक शोषण को ही शोषण समझाते हैं, जबकि मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर होने वाला शोषण भी इसमें शामिल है। कई बार बाल दुर्व्यवहार मजाक करते-करते होता है, तो कई बार अनुशासन व सुधार के नाम पर दुर्व्यवहार होता है। इन सबमें कई बार माता-पिता, अभिभावक, रिश्तेदार, शिक्षक, सहपाठी व कोच भी संलिप्त रहते हैं। निश्चितत: इस प्रकार का दुर्व्यवहार बच्चों के मानस पर दीर्घकालिक प्रभाव डालता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं और सामाजिक मेलजोल में कठिनाई जैसी गंभीर समस्याएं पैदा होती हैं। बाल तस्करी भी एक विकराल समस्या है, जहां शोषण के उद्देश्य से बच्चों को भर्ती किया जाता है, परिवहन किया जाता है, स्थानांतरित किया जाता है, आश्रय दिया जाता है या प्राप्त किया जाता है। उनसे घरेलू नौकर, बाल भिखारी, बाल सैनिक, वेश्यावृत्ति या अन्य अनैतिक कार्य कराए जाते हैं।

बच्चों और किशोरों पर होने वाले अत्याचार, हिंसा, अन्याय, क्रूरता और शोषण महज भारत की ही समस्या नहीं हैं, बल्कि दुनिया भर में बच्चों के साथ अन्याय, हिंसा, क्रूरता, प्रताड़ना और भेदभाव होता है। सिर्फ बाहरी व्यक्तियों द्वारा नहीं बल्कि घरेलू रिश्तेदारों द्वारा भी बच्चों का खुलेआम शोषण किया जाता है। बाल यौन शोषण का दायरा केवल बलात्कार या गंभीर यौन आघात तक ही सिमटा नहीं है बल्कि बच्चों को इरादतन यौनिक कृत्य दिखाना, अनुचित कामुक बातें करना, गलत तरीके से छूना, जबरन यौन कृत्य के लिये मजबूर

करना, भोलेपन का फायदा उठाने के लिये चॉकलेट, पैसे आदि का प्रलोभन देना चाइल्ड पोर्नोग्राफी बनाना आदि बाल यौन शोषण के अंतर्गत आते हैं।

2002 में जारी विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में 18 वर्ष से कम उम्र के 7.9 प्रतिशत लड़के एवं 19.7 प्रतिशत लड़कियाँ यौन हिंसा की शिकार हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, 2018 में भारत में हर दिन 109 बच्चों का यौन शोषण किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में ऐसे मामलों में 22 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। आंकड़ों से पता चलता है कि 2018 में 21,605 बच्चों के साथ बलात्कार दर्ज किए गए, जिनमें 21,401 लड़कियों के साथ और 204 लड़कों के साथ बलात्कार शामिल थे। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, 2017 में 32,608 मामले दर्ज किए गए जबकि 2018 में 39,827 मामले यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो) के तहत दर्ज किए गए। सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह रहा कि यौन शोषण करने वालों में नजदीकी रिश्तेदार या मित्र भी शामिल हैं। शारीरिक शोषण के अलावा मानसिक व उपेक्षापूर्ण शोषण के तथ्य भी अध्ययन के दौरान उभरकर आये। हर दूसरे बच्चे ने मानसिक शोषण की बात स्वीकारी, जहाँ 83 प्रतिशत जिम्मेदार माँ–बाप ही होते हैं। निश्चिततः यह स्थिति भयावह है। घरेलू हिंसा का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। जिन बच्चों ने घरेलू हिंसा में अपना जीवन बिताया है उनके मस्तिष्क का कॉर्पस कॉलोसम और हिप्पोकैम्पस नामक भाग सिकुड़ जाता है, जिससे उनकी सीखने, संज्ञानात्मक क्षमता और भावनात्मक विनियमन की शक्ति प्रभावित हो जाती है। कई बार बच्चे अपने पिता से गुस्सैल व आक्रामक व्यवहार सीखते हैं। इस का असर ऐसे बच्चों का अन्य कमजोर बच्चों और पशु–पक्षियों के साथ हिंसा करते हुए देखा जा सकता है। इसी प्रकार बालिकाएँ नकारात्मक व्यवहार सीखती हैं और वे प्रायः दब्बू, चुप–चुप रहने वाली या परिस्थितियों से दूर भागने वाली बन जाती हैं।

यूनिसेफ द्वारा 2005 से 2013 के बीच किशोरियों पर किये गए अध्ययन के आँकड़े बताते हैं कि भारत की 10 प्रतिशत लड़कियों को जहां 10 से 14 वर्ष से कम उम्र में यौन दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा, वहीं 30 प्रतिशत ने 15–19 वर्ष के दौरान यौन दुर्व्यवहार झेला। एक सभ्य समाज में बच्चों के साथ इस प्रकार की स्थिति को उचित नहीं ठहराया जा सकता। इंटरनेट और स्मार्टफोन की हर हाथ विशेषकर बच्चों व किशोरों तक पहुँच ने भी गंभीर समस्याएं उत्पन्न की हैं। टेक्नोलॉजी ने भी बचपन पर गंभीर प्रभाव डाले हैं। एक तरफ इसके सकारात्मक पहलू हैं, वहीं अभिभावक बच्चों को समय नहीं दे रहे हैं, जिसका खामियाजा बाद में सामने आ रहा है। ऐसे में जरूरी है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए अभिभावक खुद सतर्क हों और बच्चों को भी जागरूक करें। उन्हें सही–गलत और गुड टच–बैड टच के बारे में शुरू से ही समझाएं। माता–पिता द्वारा बच्चों को समय देना, उनकी दिनचर्या व संगति के बारे में जानकारी रखना और उनसे मित्रवत संवाद बहुत जरूरी है, ताकि वे उनसे खुलकर विभिन्न गतिविधियों और अपने साथ हुई घटनाओं को

शेयर कर सकें। बात–बात पर बच्चों को दोष देने की प्रवृत्ति या उनकी बातों को बचपना मानकर उपेक्षा करना भी घातक हो सकता है। जब भी बच्चे ऐसी स्थिति से गुजरते हैं तो उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ते हैं। उन्हें नींद न आना, तनाव, लोगों से डरना, बिस्तर गीला करना और अन्य कई शारीरिक और मानसिक समस्याएं हो जाती हैं। ऐसे में अभिभावकों को ज्यादा से ज्यादा समय उनके साथ बिताना चाहिए ताकि इस तनाव से बाहर आ सकें। इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया के प्रयोग को नियंत्रित करते हुए इंटरनेट साइट्स पर पैरेंटल कंट्रोलन के विकल्प को मजबूत करना चाहिये। जागरूकता से ही बाल यौन शोषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है। भारत में बाल यौन शोषण एवं दुर्व्यवहार के खिलाफ सबसे प्रमुख कानून 2012 में पारित यौन अपराध के खिलाफ बच्चों का संरक्षण कानून (पॉक्सो) है। इसमें अपराधों को चिह्नित कर उनके लिए सख्त सजा निर्धारित की गई है। साथ ही त्वरित सुनवाई के लिये स्पेशल कोर्ट का भी प्रावधान है।

आज देश प्रगति के नए प्रतिमान गढ़ रहा है, परंतु एक स्याह पक्ष यह भी है कि बाल श्रम बेगार की चक्की में बचपन को पीसता नजर आ रहा है। गैर सरकारी आंकड़ों के मुताबिक भारत में लगभग 5 करोड़ बाल श्रमिक हैं। यूनिसेफ के अनुसार दुनिया भर के कुल बाल श्रमिकों में अकेले भारत की हिस्सेदारी 12 प्रतिशत की है। 2011 की जनगणना के आंकड़ों की मानें तो भारत में 8.4 करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जाते और 78 लाख बच्चे ऐसे हैं जिन्हें मजबूरन बाल मजदूरी करनी पड़ती है। ऐसे बच्चे कहीं बाल–वेश्यावृत्ति में झोंके गये हैं या खतरनाक उद्योगों या सड़क के किनारे किसी ढाबे में जूठे बर्तन धो रहे होते हैं या धार्मिक स्थलों व चौराहों पर भीख माँगते नजर आते हैं अथवा साहब लोगों के घरों में दासता का जीवन जी रहे होते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 2021 में कोरोना काल में दुनिया भर में 160 मिलियन बच्चे बाल श्रम की चपेट में आए थे।अंतरराष्ट्रीय श्रम संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार 2016 के बाद से 5 से 17 वर्ष के मध्य खतरनाक काम करने वाले बच्चों की संख्या लगभग 65 लाख से बढ़कर 7.9 करोड़ हो गई है। बाल श्रम में 5 से 11 वर्ष के बीच बच्चों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। वस्तुतः बाल श्रम एक ऐसा अभिशाप है जो बच्चों से शिक्षा, स्वतंत्रता, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकताएं छीन लेता है। जो न केवल उस बालक बल्कि संपूर्ण राष्ट्र की उन्नति के मार्ग में बड़ी बाधा जान पड़ता है। छोटी उम्र में क्षमता से अधिक मेहनत करने के साथ ही पौष्टिक भोजन न मिलने की वजह से अधिकतर बाल श्रमिक, युवा अवस्था तक पहुंचते–पहुंचते कई तरह की बीमारियों का शिकार बन जाते हैं। उन्हें आमतौर से नाक से जुड़ी बीमारी, सिरदर्द, अंधेपन का रोग हो जाता है। कई बाल श्रमिक थकान और फेफड़े तथा सांस संबंधी रोग के भी शिकार हो जाते है। उचित मार्गदर्शन और देखभाल के अभाव में अधिकतर बाल श्रमिक नशे के भी आदी हो जाते हैं। कम उम्र में ही शराब, सिगरेट और स्मैक पीने की उन्हें लत लग जाती है। गौरतलब है कि अधिकतर स्वयंसेवी संस्थायें या पुलिस खतरनाक उद्योगों में कार्य कर रहे बच्चों को मुक्त तो करा लेती हैं पर उसके बाद उनकी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। नतीजन, ऐसे बच्चे किसी रोजगार या उचित पुनर्वास के अभाव में पुनः उसी दलदल में या अपराधियों की शरण में जाने को मजबूर होते हैं।

ऐसा नहीं है कि बच्चों के लिये संविधान में विशिष्ट उपबंध नहीं हैं। संविधान के अनुच्छेद 15(3) में बालकों के लिये विशेष उपबंध करने हेतु सरकार को शक्तियां प्रदत्त की गयी हैं। अनुच्छेद 23 बालकों के दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात्श्रम प्रतिषिद्ध करता है। इसके तहत सरकार का कर्तव्य केवल

बन्धुआ मजदूरों को मुक्त करना ही नहीं वरन् उनके पुनर्वास की उचित व्यवस्था भी करना है। अनुच्छेद 24 चौदह वर्ष से कम उम्र के बालकों के कारखानों या किसी परिसंकटमय नियोजन में लगाने का प्रतिषेध करता है। यही नहीं नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 39 में स्पष्ट उल्लिखित है कि बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरूपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर उन्हें ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो उनकी आयु या शक्ति के अनुकूल न हों। इसी प्रकार बालकों को स्वतंत्र और गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधायें दी जायें और बालकों की शोषण से तथा नैतिक व आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाय। संविधान का अनुच्छेद 45 आरम्भिक शिशुत्व देखरेख तथा 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये शिक्षा हेतु उपबन्ध करता है। इसी प्रकार मूल कर्तव्यों में अनुच्छेद 51(क) में 86वें संशोधन द्वारा वर्ष 2002 में नया खंड (ट) अंत:स्थापित करते हुए कहा गया कि जो माता–पिता या संरक्षक हैं, 6 से 14 वर्ष के मध्य आयु के अपने बच्चों या, यथा – स्थिति अपने पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करें। संविधान के इन उपबन्धों एवं बच्चों के समग्र विकास को वांछित गति प्रदान करने के लिये 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन महिला और बाल विकास विभाग गठित किया गया। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1979 में बाल श्रम के विरोध में एक प्रस्ताव पारित किया जिस को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने बाल श्रम निषेध एवं विनियमन कानून 1986 बनाया।

बच्चों के अधिकारों और समाज के प्रति उनके कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए 9 फरवरी 2004 को 'राष्ट्रीय बाल घोषणा पत्र' को राजपत्र में अधिसूचित किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को जीवन जीने, स्वास्थ्य देखभाल, पोषाहार, जीवन स्तर, शिक्षा और शोषण से मुक्ति के अधिकार सुनिश्चित कराना है। यह घोषणा पत्र बच्चों के अधिकारों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय समझौते (1989) के अनुरूप है, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किये हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मुसीबत में फंसे बच्चों हेतु चाइल्ड हेल्पलाइन–1908 की शुरुआत की गई। 18 वर्ष तक के जरूरतमंद बच्चे या फिर उनके शुभचिंतक इस हेल्पलाइन पर फोन करके मुसीबत में फंसे बच्चों को तुरन्त मदद दिला सकते हैं। यह हेल्पलाइन उन बच्चों की भी मदद करती है जो बाल श्रम के शिकार हैं। भारत सरकार द्वारा 23 फरवरी 2007 को 'बाल आयोग' का गठन भी किया गया है। बाल आयोग बनाने के पीछे बच्चों को आतंकवाद, साम्प्रदायिक दंगों, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा अश्लील साहित्य व वेश्यावृत्ति, एड्स, हिंसा, अवैध व्यापार व प्राकृतिक विपदा से बचाने जैसे उद्देश्य निहित हैं। बाल आयोग, बाल अधिकारों से जुड़े किसी भी मामले की जाँच कर सकता है और ऐसे मामलों में उचित कार्यवाही करने हेतु राज्य सरकार या पुलिस को निर्देश दे सकता है। बाल श्रम (प्रतिषेध और विनियमन) संशोधन अधिनियम 2016 के तहत 14 साल से कम उम्र के बच्चों से श्रम कराने और 18 साल तक के किशोरों से खतरनाक क्षेत्रों में काम लेने पर रोक लगाई गई है। इस अधिनियम के अनुसार बाल श्रम अब एक संज्ञेय अपराध है, जिसके लिए जेल की सजा का प्रावधान भी है। भारत में बाल यौन शोषण एवं दुर्व्यवहार के खिलाफ सबसे प्रमुख कानून 2012 में पारित यौन अपराध के खिलाफ बच्चों का संरक्षण कानून (पॉक्सो) है। इसमें अपराधों को चिह्नित कर उनके लिए सख्त सजा निर्धारित की गई है। इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों–कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो कहीं न कहीं इसके लिये समाज भी दोषी है। कोई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक–सामाजिक–नैतिक समर्थन दिया जाए, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें।

कई देशों में तो बच्चों के लिए अलग से लोकपाल नियुक्त हैं। सर्वप्रथम नार्वे ने 1981 में बाल अधिकारों की रक्षा के लिए संवैधानिक अधिकारों से युक्त लोकपाल की नियुक्ति की। कालान्तर में ऑस्ट्रेलिया, कोस्टारिका, स्वीडन 1993, स्पेन (1996), फिनलैण्ड इत्यादि देशों ने भी बच्चों के लिए लोकपाल की नियुक्ति की। लोकपाल का कर्तव्य है कि बाल अधिकार आयोग के अनुसार बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देना तथा उनके हितों का समर्थन करना। यही नहीं निजी और सार्वजनिक प्राधिकारियों में बाल अधिकारों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना भी उनके दायित्वों में है। कुछ देशों में तो लोकपाल सार्वजनिक विमर्श में भाग लेकर जनता की अभिरुचि बाल अधिकारों के प्रति बढ़ाते हैं एवं जनता व नीति निर्धारकों के रवैये को प्रभावित करते हैं। यही नहीं वे बच्चों और युवाओं के साथ निरन्तर सम्वाद कायम रखते हैं, ताकि उनके दृष्टिकोण और विचारों को समझा जा सके। बच्चों के प्रति बढ़ते दुर्व्यवहार एवं बालश्रम की समस्याओं के मद्देनजर भारत में भी बच्चों के लिए स्वतंत्र लोकपाल व्यवस्था गठित करने की माँग की जा रही है।पर मूल प्रश्न यह है कि इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों–कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो समाज भी अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकता। कोई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह तो मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक–सामाजिक–नैतिक समर्थन दिया जाए, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें।

आज जरूरत है कि बालश्रम और बाल उत्पीड़न की स्थिति से राष्ट्र को उबारा जाये। ये बच्चे भले ही आज वोट बैंक नहीं हैं पर आने वाले कल के नेतृत्वकर्ता हैं। उन अभिभावकों को जो कि तात्कालिक लालच में आकर अपने बच्चों को बालश्रम में झोंक देते हैं, भी इस सम्बन्ध में समझदारी का निर्वाह करना पड़ेगा कि बच्चों को शिक्षा रूपी उनके मूलाधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिये। गैर सरकारी संगठनों और सरकारी मशीनरी को भी मात्र कागजी खानापूर्ति या मीडिया की निगाह में आने के लिये अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करना चाहिये बल्कि उनका उद्देश्य इनकी वास्तविक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना होना चाहिये। आज यह सोचने की जरूरत है कि जिन बच्चों पर देश के भविष्य की नींव टिकी हुई है, उनकी नींव खुद ही कमजोर हो तो वे भला राष्ट्र का बोझ क्या उठायेंगे। अत: बाल अधिकारों के प्रति सजगता एक सुखी और समृद्ध राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है।

केरलियों का वृश्चिकोत्सव : सबरीमला मंडलापूजा

डॉ. षैजू के
सहायक आचार्य
सरकारी लॉ कॉलेज एर्णाकुलम
केरल

सबरीमाला मंदिर यानि श्री अय्यप्पा मंदिर केरल राज्य के पतनमतिट्टा जिले में है। ये प्राचीनतम मंदिरों में से एक माना जाता है। दक्षिण पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान अयप्पा को भगवान शिव और मोहिनी (भगवान विष्णु का रूप) का पुत्र माना जाता है। जिनका नाम हरिहरपुत्र भी है। कहा जाता है कि इस मंदिर में भगवान की स्थापना स्वयं परशुराम ने की थी और यह विवरण 'रामायण' में भी मिलता है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण कार्य भगवान विश्वकर्मा के सान्निध्य में पूरा हुआ। बाद में परशुराम जी ने मकर संक्रांति के दिन यहां भगवान की स्थापना की। हिन्दु, मुस्लिम और ईसाई सहित सभी धर्मो के लोग यहां दर्शन करने आते हैं।

मंडला पूजा : नवंबर 17 को केरल में मंडलापूजा पूजा की शुरुवात होती है। मंडला पूजा, शास्त्रों में निर्धारित सभी तपस्या और दिनचर्या के साथ 41 दिनों की लंबी अवधि पूरे कठोर रीती रिवाज के साथ पालन किया जाने वाला अनुष्ठान है।मंडला पूजा के दौरान भक्त व्रत रखता है, वह उसकी आत्मा को शुद्ध करने और दृष्टि की स्पष्टता को बढ़ाने में मदद करता है। मंडला पूजा के माध्यम से भक्त को अविश्वसनीय पवित्र वरदान मिलता है। आमतौर पर मंडला पूजा भक्त देवता को प्रसन्न करने के लिए की जाती है, चाहे वह भगवान का कोई भी रूप हो।

मंडला पूजा का पालन : भक्त को प्रतिदिन सुबह जल्दी स्नान करना चाहिए, एक विशेष प्रकार के कपड़े और तुलसी की माला को उस देवता के साथ धारण करना चाहिए जिसे भक्त प्रसन्न करना चाहता है। आमतौर पर, इस माला को गुरु द्वारा आशीर्वाद दिया जाता है और मंडला पूजा की शुरुआत में उम्मीदवार को दिया जाता है। मंडला पूजा करने के लिए मन्नत लेने के बाद, भक्त दिन में दो बार सुबह और शाम घर पर पूजा करता है और देवता के मंदिर में भी जाता है।

मंडला पूजा के समापन के बाद, भक्त अपने पसंदीदा देवता के मंदिर की तीर्थ यात्रा करता है। मंडला पूजा अवधि के दौरान मांसाहारी भोजन, किसी भी तरह का भोग, मनोरंजन, मसालेदार भोजन, झूठ, अनैतिक कार्य, बुरी संगति, बुरे विचार और अनुचित व्यवहार सभी निषिद्ध हैं।

मंडला पूजा का समापन : मंडला पूजा अवधि के दौरान, गुरुवायुर के मंदिर में लगभग उसी समय विशेष समारोह और नियमित समारोह आयोजित किए जाते हैं जैसे सबरीमाला में किया जाता है। दैनिक आधार पर, देवता को पंचगव्य के साथ पवित्र स्नान दिया जाता है। 41 दिनों के बाद भक्त अपना मंडला पूजा विधि समाप्त करने के लिए मंदिर दर्शन करने जाता है और नतमस्तक होकर अपना पूजा समाप्त करता है। पूरी अवधि के दौरान, तीर्थ स्थल पर आने वाले भक्तों के साथ मंदिर उत्सव मुखरित रहता है। यह पूजा विधि के तरीके दक्षिण भारत में ज्यादातर प्रचलित है जो की अभी पूरे भारत बर्ष में प्रचलित होने लगा है।

सबरीमाला मंदिर का इतिहास : सबरीमाला मंदिर केरल के तिरुवंतपुरम स्थित पत्तनमतिट्टा जिले में है और यह मंदिर भगवान अय्यप्पा को समर्पित है। ये मंदिर दुनिया के बड़े तीर्थ में गिना जाता है। यहां हर साल भगवान के दर्शन के लिए लगभग 5 करोड़ लोग आते हैं। इस मंदिर की देखरेख और व्यवस्था त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड के हाथ में है। 12वीं सदी से इस मंदिर में भगवान अय्यपा की पूजा की जाती है। दक्षिण पौराणिक कथाओं के मुताबिक भगवान अयप्पा को भगवान शिव और मोहिनी (भगवान विष्णु का रूप) का पुत्र माना जाता है। जिनका नाम हरिहरपुत्र भी है। कहा जाता है कि इस मंदिर में भगवान की स्थापना स्वयं परशुरामजी ने की थी और यह विवरण रामायण में भी मिलता है। इस मंदिर का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने किया था और मकर संक्रांति के दिन यहां भगवान की स्थापना की गई थी।

सबरीमला दर्शन की प्रक्रिया : ये मंदिर श्रद्धालुओं के लिए साल में सिर्फ नवंबर से जनवरी तक खुलता है। बाकी महीने इसे बंद रखा जाता है। भक्तजन पंपा त्रिवेणी में स्नान करते हैं और दीपक जलाकर नदी में प्रवाहित करते हैं। इसके बाद ही शबरीमलै यानी सबरीमाला मंदिर जाना होता है। पंपा त्रिवेणी पर गणपति जी की पूजा करते हैं। उसके बाद ही चढ़ाई शुरू करते हैं। पहला पड़ाव

शबरी पीठम नाम की जगह है। कहा जाता है कि यहां पर रामायण काल में शबरी नामक भीलनी ने तपस्या की थी। श्री अय्यप्पा के अवतार के बाद ही शबरी को मुक्ति मिली थी।

इसके आगे शरणमकुट्टी नाम की जगह आती है। पहली बार आने वाले भक्त यहाँ पर शर (बाण) गाड़ते हैं। इसके बाद मंदिर में जाने के लिए दो मार्ग हैं। एक सामान्य रास्ता और दूसरा अट्ठारह पवित्र सीढ़ियों से होकर। जो लोग मंदिर आने के पहले 41 दिनों तक कठिन व्रत करते हैं वो ही इन पवित्र सीढ़ियों से होकर मंदिर में जा सकते हैं। अठारह पवित्र सीढ़ियों के पास भक्तजन घी से भरा हुआ नारियल फोड़ते हैं। इसके पास ही एक हवन कुण्ड है। घृताभिषेक के लिए जो नारियल लाया जाता है, उसका एक टुकड़ा इस हवन कुण्ड में भी डाला जाता है और एक अंश भगवान के प्रसाद के रूप में लोग अपने घर ले जाते हैं। शबरीमलै मंदिर में भगवान की पूजा का एक प्रसिद्ध अंश घी का अभिषेक करना है। श्रद्धालुओं द्वारा लाए गए घी को सबसे पहले एक खास बर्तन में इकट्ठा किया जाता है, फिर उस घी से भगवान का अभिषेक किया जाता है।

मंदिर दर्शन के नियम :

1– भक्तों को यहाँ आने से पहले इकतालीस दिन तक समस्त लौकिक बंधनों से मुक्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करना जरूरी है।
2– इन दिनों में उन्हें नीले या काले कपड़े ही पहनने पड़ते हैं।
3– गले में तुलसी की माला रखनी होती है और पूरे दिन में केवल

एक बार ही साधारण भोजन करना होता है।

4– शाम को पूजा करनी होती है और जमीन पर ही सोना पड़ता है।

5– इस व्रत की पूर्णाहूति पर एक गुरु स्वामी के निर्देशन में पूजा करनी होती है।

6– मंदिर यात्रा के दौरान उन्हें सिर पर इरुमुडी रखनी होती है यानी दो थैलियां और एक थैला। एक में घी से भरा हुआ नारियल व पूजा सामग्री होती है तथा दूसरे में भोजन सामग्री। ये लेकर उन्हें शबरी पीठ की परिक्रमा भी करनी होती है, तब जाकर अठारह सीढ़ियों से होकर मंदिर में प्रवेश मिलता है।

अय्यप्पा स्वामी व ब्रह्मचारी : केरल में शैव और वैष्णवों में बढ़ते वैमनस्य के कारण एक मध्य मार्ग की स्थापना की गई थी। जिसमें अय्यप्पा स्वामी का सबरीमाला मंदिर बनाया गया था। इसमें सभी पंथ के लोग आ सकते थे। दक्षिणी मान्यता के अनुसार भगवान अयप्पा स्वामी को ब्रह्मचारी माना गया है, इसी वजह से मंदिर में उन महिलाओं का प्रवेश वर्जित था जो रजस्वला हो सकती थीं। सबरी माला मंदिर करीब 800 साल पुराना है और यहां भगवान अयप्पा की पूजा विधि–विधान से होती है। भगवान अयप्पा को प्रभु कार्तिकेय का ही रूप माना गया है क्योंकि भगवान नित्य ब्रह्मचारी माने गए हैं। भगवान अयप्पा के दर्शन पूजन की तैयारी 41 दिन पहले से शुरू हो जाती है। इस प्रक्रिया को मंडल व्रतम के नाम से जाना जाता है। यह व्रत इस बार 16 नवंबर से शुरू हो गया था और 26 दिसंबर को मंडला पूजा के साथ संपन्न होगा। सबरीमाला अयप्पा मंदिर में पूजा की प्रक्रिया तब शुरू होती है जब सूर्यदेव धनु राशि में गोचर करते हैं और इसे धनु मास भी कहते हैं। धनुमास में मंडला पूजा 11 वें या 12 वें दिन मनाई जाती है। मंडला पूजा में 41 दिनों की लंबी तपस्या के अंतिम दिन विशेष पूजा होती है। मंडला पूजा से 41 दिन पहले यानी जब सूर्यदेव वृश्चिक राशि में होते हैं तब से भगवान अयप्पा की पूजा शुरू होती है। सबरीमाला अयप्पा मंदिर में मंडला पूजा और मकर विलक्कू दो सबसे प्रसिद्ध पर्व माने गए हैं और इस दिन भक्तों के लिए ये मंदिर खुलता है।

गणेशजी का आव्हान : मंडला पूजा के दौरान भगवान अयप्पा को सर्वप्रिय तुलसी और रुद्राक्ष की माला पहन कर भक्त पूजा करते हैं। साथ ही शरीर पर चंदन का लेप लगाते हैं। 41 से 56 दिनों तक चलने वाली इस महापूजा के दौरान भक्त मन और तन की पवित्रता का पूरा ध्यान रखते हैं। भगवान गणपति के आहवान के साथ यह पूजा प्रारंभ होती है। पूजा के दौरान भगवान अयप्पा के दर्शन का भी बहुत महत्व है इसलिए कई भक्त मंदिर में दर्शन के लिए भी जाते हैं।

महापूजा और मंदिर में दर्शन का महत्व : मान्यता है कि अगर यहां आने वाले श्रद्धालु तुलसी या रुद्राक्ष की माला पहनकर, उपवास रखकर और सिर पर नैवेद्य यानी भगवान को चढ़ाए जाने वाला प्रसाद लेकर दर्शन के लिए आते हैं तो उनकी हर प्रकार की मनोकामना पूरी हो जाती है। मान्यता है कि मंडला पूजा में भगवान के दर्शन भर से भक्तों की मन की आस पूरी हो जाती है। साथ ही हर तरह के रोगों से मुक्ति मिलती है।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?

क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 नवंबर 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेल: **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

दृष्टि

रीता रानी
स्वतंत्र लेखन
जमशेदपुर, झारखण्ड

हमारी आंखें इतनी शक्तिवान होती है कि वह एक सेकेंड में 50 चीजें देख सकती हैं, साफ मौसम में आंखें करीब 20 किलोमीटर से भी अधिक दूर तक देख सकती हैं – ये सब कुछ रोचक तथ्य हैं हमारी प्रमुख इन्द्रिय शक्ति आँखों के बारे में, जिसके बाधित होने से जीवन की गुणवत्ता दीर्घकालिक एवं गंभीर रूप से प्रभावित होती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार, 2015 में, दुनिया भर में अनुमानित 253 मिलियन लोग दृष्टिबाधित थे। इनमें से 36 मिलियन अंधे थे और अन्य 217 मिलियन मध्यम से गंभीर दृश्य हानि (एमएसवीआई) से पीड़ित थे। अपने देश भारत में अंधेपन की अनुमानित व्यापकता जनसंख्या का 0.36% (4.95 मिलियन) है। हल्की, मध्यम और गंभीर दृष्टि हानि की अनुमानित व्यापकता जनसंख्या का क्रमशः 2.92% (40 मिलियन), 1.84% (25 मिलियन), और 0.35% (4.8 मिलियन) है।

दृष्टिहीनों में दोष के प्रमुख कारणों में असंशोधित अपवर्तक कमियां (43%) और मोतियाबिंद (33%) हैं। अधिकांश अंधेपन (लगभग 80 %) का बचाव यानि कि उपचार या रोकथाम की जा सकती है । वैश्विक स्तर पर, अंधेपन से पीड़ित केवल बच्चों की ही संख्या लगभग 14 लाख है, जो वैश्विक दृष्टिहीन आबादी का 4% है और अतिरिक्त 17.5 मिलियन को खराब दृष्टि विकसित होने का खतरा है। दृष्टिबाधित लगभग 66% बच्चों में एक अन्य विकलांगता (सह–रुग्णता) भी होती है, चाहे वह बौद्धिक विकलांगता हो, सेरेब्रल पाल्सी हो, या सुनने की हानि हो। परिणामतः दृष्टिबाधिता का स्वरूप और भयावह हो जाता है।

बचपन का अंधापन अफ्रीका और एशिया के बच्चों में सबसे अधिक है, जो दुनिया की 75% प्रभावित आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। बच्चों में अंधेपन के कई कारण हैं –

आनुवंशिक, समय से पहले जन्म, पोषण संबंधी कमी, संक्रमण, चोट और अन्य कारण भी।

क्षेत्रीय अंतर के संदर्भ में, निम्न और मध्यम आय वाले क्षेत्रों में दूर दृष्टि हानि की व्यापकता उच्च आय वाले क्षेत्रों की तुलना में 4 गुना अधिक होने का अनुमान है। निकट दृष्टि के संबंध में, पश्चिमी, पूर्वी और मध्य उप-सहारा अफ्रीका में अज्ञात निकट दृष्टि हानि की दर 80% से अधिक होने का अनुमान है, जबकि उत्तरी अमेरिका, अश्वस्ट्रेलिया, पश्चिमी यूरोप और उच्च आय वाले जिलों में संयुक्त रूप से एशिया-प्रशांत में 10% से कम होने की जानकारी है।

इसी अंधेपन और दृष्टिहीनता के मुद्दे पर विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए 'विश्व दृष्टि दिवस' प्रत्येक वर्ष अक्तूबर के दूसरे गुरुवार को वैश्विक स्तर पर मनाया जाता है। यह दिवस पहली बार वर्ष 2000 में लायंस क्लब इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन के साइट फर्स्ट (SightFirst) अभियान के तहत मनाया गया था। अंतर्राष्ट्रीय अंधता निवारण एजेंसी (आईएपीबी) अंधता और दृष्टि हानि की रोकथाम के लिए काम करने वाले नेत्र स्वास्थ्य संगठनों का एक वैश्विक गठबंधन है जिसकी स्थापना 1975 ई0 में वैश्विक अंधापन निवारण गतिविधियों के लिए एक प्रमुख निकाय के रूप में काम करने के लिए की गई थी। 1999 में, IAPB और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 'विजन 2020: द राइट टू साइट' लॉन्च किया, जो परिहार्य अंधेपन को खत्म करने के लिए एक वैश्विक पहल है, जिसने कुछ सफलता हासिल की है, हालांकि यह अपने सभी लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाई है। IAPB सौ से अधिक देशों में 150 से अधिक संगठनों की गतिविधियों का समन्वय करता है जो नेत्र देखभाल की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए सहयोग करते हैं। इनमें पेशेवर निकाय, गैर-सरकारी संगठन, संघ, फाउंडेशन और शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं।

विजन 2020 का लक्ष्य नेत्ररोगों की रोकथाम और नियंत्रण, कार्मिक प्रशिक्षण, नेत्र देखभाल के बुनियादी ढांचे में सुधार, उचित और सस्ती तकनीक के उपयोग और संसाधनों को जुटाकर, 2020 में अंधे लोगों की अनुमानित संख्या को 75 मिलियन से कम करके 25 मिलियन करना था। जिन स्थितियों को प्राथमिकता के रूप में पहचाना गया, वे थीं – मोतियाबिंद , बचपन का अंधापन, ओंकोसेरसियासिस, ट्रेकोमा और असंशोधित अपवर्तक त्रुटियाँ। 2020 में अंधेपन का वैश्विक प्रमुख कारण मोतियाबिंद रहा।

दुनिया भर में एक अरब से अधिक लोग ऐसे हैं जो ठीक से देख नहीं सकते हैं क्योंकि उनके पास चश्मे तक पहुँच की सुविधा नहीं है। 2000 में शुरू हुआ 'विश्व दृष्टि दिवस' नेत्र स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने और विश्व स्तर पर नेत्र स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बढ़ाने के महत्व को उजागर करने का एक अवसर बन गया है। यह दुनिया भर की सरकारों को अंधापन निवारण कार्यक्रमों और शैक्षिक पहलों के लिए धन आवंटित करने के लिए प्रभावित करने का एक उपकरण भी बन गया है।

इस वर्ष 12 अक्टूबर, 2023 को विश्व दृष्टि दिवस का मुख्य विषय 'काम पर अपनी आंखों से प्यार करें' है, जो कार्यस्थल में आंखों के स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करता है।

भविष्य की रूपरेखा के आधार पर '2030 IN SIGHT ' परियोजना तैयार किया गया है जो विजन 2020 पर ही आधारित है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अनावश्यक और रोकथाम योग्य दृष्टि हानि को समाप्त करना है, यह सुनिश्चित करना है कि सभी के लिए पर्याप्त नेत्र देखभाल सेवाएं किफायती रूप से उपलब्ध हों और हर कोई अपनी आंखों की देखभाल की आवश्यकता को समझता हो।

आँखों के अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए साधारण नियम बहुत ही सहायक हैं। यथा, विटामिन। युक्त स्वस्थ आहार का सेवन, धूम्रपान निषेध, यूवी संरक्षित धूप का चश्मा, खतरनाक पदार्थों से काम करने पर सुरक्षा चश्मा, लंबी अवधि तक कंप्यूटर पर काम करने पर बीच-बीच में उठना और आँखों को अधिक से अधिक बार झपकाना, टेलीविजन देखते या कंप्यूटर पर काम करते हुए एंटी ग्लेयर चश्मा पहनना, मंद प्रकाश में न पढ़ना, आँखों की नियमित जांच कराना, खिड़कियों एवं लाइट द्वारा कंप्यूटर पर पड़ने वाली चकाचौंध से बचने की कोशिश करना यदि आवश्यक हों, तो एंटी ग्लेयर स्क्रीन का उपयोग करना यकॉन्टेक्ट लेंस पहनने पर लंबी अवधि तक पहनने से बचना, कॉन्टेक्ट लेंस पहनते हुए तैराकी एवं सोने से बचना, आँखों को आराम देने के लिए हर बीस मिनट में बीस फीट की दूरी पर बीस सेकंड के लिए देखना आदि।

एक प्रमुख आवश्यक कार्य इस क्षेत्र में नेत्रदान के प्रति जागरूकता पैदा करना और इस क्षेत्र में लोगों के योगदान को बढ़ाना अत्यंत आवश्यक और सार्थक कदम है। देश में हर साल 80 से 90 लाख लोगों की मृत्यु होती है लेकिन नेत्रदान 25 हजार के आसपास ही होता है। मृत्यु के बाद एक व्यक्ति चार लोगों को रोशनी दे सकता है। पहले दोनों आंखों से केवल दो ही कार्निया मिलती थी लेकिन अब नई तकनीक आने के बाद से एक आंख से ही दो कार्निया प्रत्यारोपित की जा रही हैं।खास बात यह भी है कि व्यक्ति के मरने पर उसकी पूरी आंख नहीं बदली जाती है केवल रोशनी वाली काली पुतली ही ली जाती है।

वास्तव में आँखों के स्वास्थ्य को बनाए रखना केवल एक व्यक्ति का ही कर्तव्य नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

ॐ का रहस्य

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ॐ का उच्चारण मन व आत्मा को शक्ति देता है । भारतीयों के जीवन में ॐ का व्यवहार वैदिक काल से ही प्रचलित है। वैष्णव, जैन, बौद्ध, सिख पद्धतियों मे ॐ की प्रतिष्ठा है। पाणिनि ने ॐ को सदा रहने वाला अव्यय और अविनाशी बताया है। ॐ का उच्चारण करते हुए शरीर त्यागने वाले परमात्म तत्व को प्राप्त होते हैं।

हिन्दू, बौद्ध, सिख, जैन धर्म में ॐ की ध्वनि को पवित्र माना जाता है। ॐ शांति का प्रतीक है और हमारे मन के अंदर वह बाहर भी है। जब हम श्वास लेते हैं तब भी ॐ की ध्वनि निकलती है। ॐ वह ब्रह्म है जिसका कभी क्षरण नहीं हो सकता।

ॐ भारत की निर्विवाद आस्था है, ॐ एक रहस्य है, विद्वान इसे अ, उ तथा म का योग कहते हैं। लेकिन वास्तविकता में यह है कि ॐ ध्वनि इसका बीज है जो कि अ, उ, म तक फैलता है। गोपथ ब्राह्मण की सोलहवीं कंडिका से तीसवीं कंडिका तक ॐ का विश्लेषण है। ॐ ऋग्वेद में ऋचा है, सामवेद में गीत है, यजुर्वेद में यजुष है ।

ॐ ब्राह्मणों में ज्ञान और ब्राह्मण ग्रन्थों में ब्राह्मण है। ॐ सूत्रों में सूत्र है और श्लोकों में श्लोक है तथा प्रणव में यह प्रणव होता है। उत्तर वैदिक काल में भी ॐ की महत्ता सर्वव्यापक थी। ॐ परमात्मा का नाम ही भी है और स्वयं ब्रह्म भी है। ॐ भारतीय चिंतन में सीमातीत और अर्थातीत है। ऐसा माना जाता है कि किसी भी देवी देवता के श्लोक उच्चारण से पूर्व ॐ का उच्चारण करने से स्वयं पर ब्रह्म व पराशक्ति उस वायुमंडल में अवतरित होती है।

एक मान्यता यह भी है कि ऋग्वेद की रचना से पहले ही ॐ की ध्वनि की शक्ति व महत्व को पहचाना जा चुका था। पतंजलि योग सूत्र में तस्य वाचक प्रणव के रूप में ॐ है।

कठोपनिषद में 1.2.15 श्लोक में कहां गया है कि ॐ सभी तपों का लक्ष्य है। श्रीमद् भागवत गीता में भी अध्याय 7 व 8 में ॐ की महिमा का उल्लेख कई बार हुआ है। कृष्ण ने स्वयं को 'सर्व वेदेषु प्रणव' यानी ॐ बताया है।

डॉक्टर राधाकृष्णन ने गीता अनुवाद की टिप्पणी में लिखा ॐ ब्रह्मा का प्रतीक है, जिसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है। ॐ अव्याख्येय अनिवर्चनीय असीम है। भूत वर्तमान और भविष्य से भिन्न जिस परमात्मा तत्व को आप हर पल महसूस कर सकते हैं वह ॐ है।

कहा जाता है कि ॐ के जाप से परमपिता परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। क्योंकि ॐ ईश्वर की सभी रूपों का संयुक्त रूप है। ॐ के जाप को अनिष्टों का समूल नाश करने वाला व सुख समृद्धि प्रदायक माना गया है। ओंकार ब्रह्मनाद है। इसके उच्चारण में व जप से धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारों पुरुषार्थो की प्राप्ति होती है।

सनातन धर्म में ॐ को बहुत प्रभावशाली माना गया है। ॐ का उच्चारण करते समय तीन अक्षरों की ध्वनि निकलती है जो क्रमशः अ,उ,म है। इसमें अ वर्ण सृष्टि का द्योतक है, उ वर्ण स्थिति दर्शाता है और म वर्ण लय का सूचक है। इन तीन अक्षरों में त्रिदेव यानी ब्रह्मा विष्णु महेश की साक्षात वास माना जाता है। इसी कारण ॐ का उच्चारण अत्यंत प्रभावशाली व चमत्कारिक लाभ पहुंचाने वाला माना गया है। यही कारण है कि प्रत्येक मंत्र के उच्चारण से पूर्व ॐ अवश्य लगाया जाता है।

अनेक विद्वानों ने ॐ की उत्पत्ति शिव के मुख से मानी है। ऋग्वेद और यजुर्वेद से लेकर कई उपनिषदों में ॐ का जिक्र मिलता है। मंडूक उपनिषद में कहा गया है कि संसार में भूत भविष्य और वर्तमान में तथा इनसे भी परे जो हमेशा हर जगह मौजूद है, वह ॐ है। यानी ॐ इस ब्रह्मांड में हमेशा से था और हमेशा रहेगा।

जैन धर्म में अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनियों को पंच परमेष्ठी माना गया है। इनके आद्य अक्षरों को मिलाया जाए तो ॐ की ध्वनि निकलती है। ॐ के 10 रहस्य व चमत्कार हैं :

1. अनहद नाद ॐ की ध्वनि को अनहद नाद कहते हैं अर्थात यह किसी आहत या टकराव से पैदा नहीं होती वरन स्वयंभू है। यह शाश्वत ध्वनि है इसी से ब्रह्मांड का जन्म हुआ है। सृष्टि के कण कणमें, अंतरिक्ष में, मनुष्य के भीतर सूर्य चंद्र ग्रहों सहित ब्रह्मांड के प्रत्येक कण से यह ध्वनि अनवरत गुंजित हो रही है।

2. ब्रह्मांड का जन्मदाता ॐ शिव पुराण मानता है कि नाद और बिंदु के मिलन से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। संपूर्ण ब्रह्मांड और कुछ नहीं सिर्फ कंपन, ध्वनि और प्रकाश की उपस्थिति ही है। जहां जितनी ऊर्जा होगी वहां उतनी देर तक जीवन रहेगा।

3. ॐ का अर्थ – ॐ शब्द तीन ध्वनियों से बना है– अ, उ, म। इन तीनों ध्वनियों का अर्थ उपनिषद में भी आता है। इनमें 'अ' ब्रह्मा का वाचक है जो हृदय में बसता है। 'उ' विष्णु का वाचक है जिसका स्थान कंठ में होता है। तथा 'म' रूद्र का वचक है जिसका स्थान तालु मध्य में होता है। इस तरह ॐ में संपूर्ण ब्रह्मांड को संवारने व नष्ट करने की क्षमता है।

4. ॐ का आध्यात्मिक अर्थ– ओ, उ और म तीन वर्ण वाले इस शब्द की महिमा अपार है। यह ब्रह्मां ,विष्णु, महेश का प्रतीक है, जो नाभि, हृदय और आज्ञा चक्र को जागृत करता है। यह भूलोक, भुवः लोक और स्वर्ग अंतरिक्ष का प्रतीक है। वेदों में ओंकार के सौ से अधिक अर्थ दिए गए हैं।

5. मोक्ष का साधन– ॐ ही एकमात्र ऐसा प्रणव मंत्र है जो आपको अनहद मोक्ष की ओर ले जाता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार मूल मंत्र या जप तो ॐ ही है। ॐ के आगे पीछे लिखे जाने वाले शब्द गौण होते हैं। इसे प्रणव साधना भी कहा जाता है, ये अनादि अनंत निर्वाण कैवल्य ज्ञान तथा मोक्ष की अवस्था का ही प्रतीक है।

6. प्रणव की महत्ता– ॐ को प्रणव नाम से भी जाना जाता है। अर्थात 'प्र' यानी प्रकृति से बने संसार रूपी सागर को पार कराने वाली। 'ण' यानी नाव बताया गया है। ऋषियों मुनियों की दृष्टि में 'प्र' यानी प्रकेर्षण,'ण' यानि नयेत और 'व' यानि आयुष्मान व मोक्षरू है।

7. स्वतः उत्पन्न ध्वनि जाप– ॐ के उच्चारण का अभ्यास करते–करते एक स्थिति यह होती है कि आंखों और कानो को बंद करने पर ये ध्वनि अपने आप भीतर स्वत सुनाई देती है। प्रारंभ में बीन की तरह, फिर शंख जैसी ध्वनि सुनाई देने लगती है।

8. शारीरिक व मानसिक शांति– ॐ का लगातार उच्चारण जाप करने से शरीर व मन एकाग्र होते हैं। इससे शारीरिक रोग ठीक होकर मानसिक क्षमता बढ़ती है।

9. सृष्टि विनाश की क्षमता– ॐ की ध्वनि सूक्ष्म से सूक्ष्म व विराट होने की क्षमता रखती है। इसमें संपूर्ण ब्रह्मांड को संवारने व नष्ट करने की क्षमता होती है।

10. शिवालियों में होता रहता है ॐ का जाप ॐ सभी ज्योतिर्लिगों के पास स्वतः ही ॐ प्रसफुटित होता रहता है ।

संदर्भ –

1. इंडिया टाइम्स . कॉम
2. हिंदी वेब दुनिया. कॉम
3. ही कोरा. कॉम

Flipkart amazon पर उपलब्ध

बाल गंगाधर तिलक और उनकी विशद कृति 'गीता रहय'

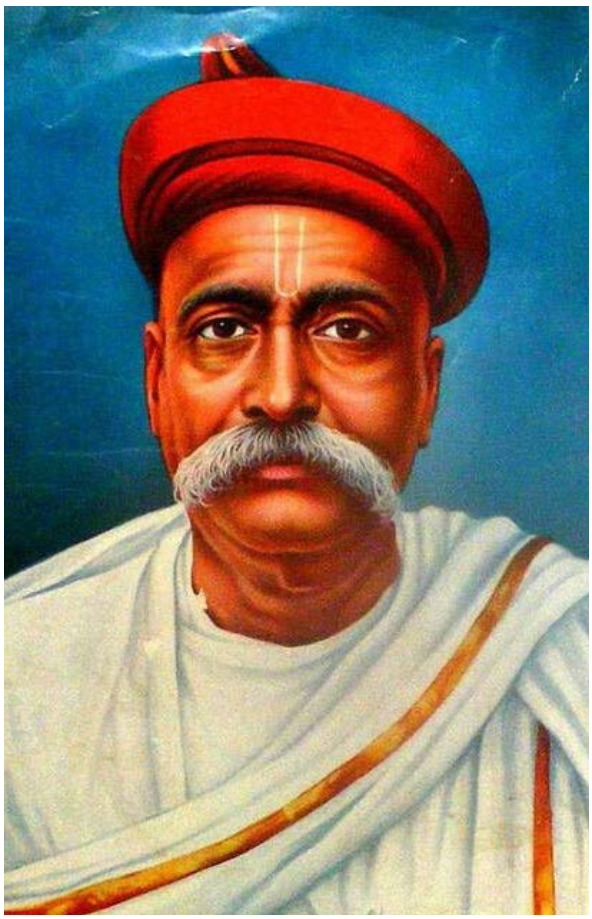

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

बाल गंगाधर तिलक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के जनक के रूप में जाने जाते हैं। महात्मा गांधी ने उन्हें 'आधुनिक भारत का निर्माता' की उपाधि से विभूषित किया था और पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें 'भारतीय क्रांति का जनक' कहा था। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपने समय में उन्होंने बढ़ चढ़कर भाग लिया था इसलिए वैलेंटाइन चिरोल नाम के एक अंग्रेजी पत्रकार ने उन्हें 'अशांति का जनक' कह कर उनका विरोध किया और जिसके लिए उन्हें दो बार जेल भेज दिया गया था। बाल गंगाधर तिलक ने 'गीतारहस्य' के रूप में श्रीमद्भागवत गीता की एक नई व्याख्या कर देशवासियों को गीता में प्रतिपादित कर्मयोग की तरफ आकर्षित किया ही, साल में उन्होंने 'द ओरियन' और वेदों में 'आर्कटिक होम' इन दोनों ग्रंथों की भी रचना की थी। इन दोनों का उद्देश्य वैदिक धर्म के उत्तराधिकारी के रूप में हिंदू संस्कृति को बढ़ावा देना था।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में एक सुसंस्कृत मध्यवर्ती ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता एक शिक्षक और प्रसिद्ध व्याकरणविद् थे । तिलक की आरंभिक शिक्षा पुणे में हुई और दसवीं की परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी में पास की। उन्होंने बी.ए. पुणे के डेक्कन कॉलेज से गणित और संस्कृत में पास कर वहां से स्नातक की डिग्री हासिल की। कानून की पढ़ाई उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से की और 1879 में उन्हें कानून की डिग्री मिल गई। तत्पश्चात, वे पुणे के एक स्कूल में गणित पढ़ाने लगे परंतु शीघ्र ही वह राष्ट्रवादी आंदोलन में कूद पड़े और वर्ष 1890 में वह कांग्रेस में शामिल हो गए।

देश की दुर्दशा की ओर जनता का ध्यान दिलाने के लिए उन्होंने वर्ष 1891 में दो समाचार पत्रों का प्रकाशन आरंभ किया। इनमें से एक 'केसरी' साप्ताहिक था जो मराठी में प्रकाशित होता था और 'मराठा' साप्ताहिक समाचार पत्र अंग्रेजी में प्रकाशित होता था। इन समाचार पत्रों ने थोड़े ही समय में काफी प्रसिद्ध प्राप्त कर ली। वह देश में दी जा रही शिक्षा व्यवस्था से भी असंतुष्ट थे। उनका कहना था कि जब तक भारतीय ही भारतीयों को नहीं पढ़ायेंगे तब तक सही शिक्षा नहीं मिल सकती। शिक्षा सुधारों के लिए उन्होंने वर्ष 1880 में न्यू इंडिया स्कूल की स्थापना की और अगले ही वर्षो में अर्थात् 1884 और 1885 में क्रमशः दक्कन ऐजुकेशन सोसायटी और फर्गुसन कॉलेज की स्थापना की। समाज सुधारक होने के नाते वह बाल विवाह के विरुद्ध थे और विधवा पुनर्विवाह के प्रबल समर्थक थे।

उन्होंने समाज में व्याप्त छूआछूत की बुराई के विरुद्ध भी आवाज उठाई थी।

बाल गंगाधर तिलक को अंग्रेजी सरकार ने वर्ष 1897 में एक भाषण के द्वारा अशांति फैलाने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया। डेढ़ वर्ष बाद उनकी रिहाई हो गई। बाल गंगाधर तिलक स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वराज का चार-सूत्री कार्यक्रम के माध्यम से जन जागरण में जुट गये। वर्ष 1907 में उन्होंने केसरी समाचार पत्र में दो आलेख 'द कंट्रीज मिसफार्च्यून' तथा 'दीस रेमडीज आर नॉट लास्टिंग' लिखे जिसमें सरकार के अत्याचारों को लेकर उसकी कटु आलोचना की गई थी जिससे कुपित होकर सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया जिसमें उन्हें छह वर्ष की सजा हो गई। उसके लिए उन्हें वर्ष 1908 में बर्मा की माणडले जेल भेज दिया गया।

बाल गंगाधर तिलक 1914 में माण्डले जेल से रिहाई के बाद होम रूल आंदोलन में कूद पड़े और उन्होंने नारा दिया, 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और यह हम ले के रहेंगे। वह पूर्ण स्वराज के सब से आरिंभक और सबसे प्रमुख सेनानियों में से थे। वह लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल के साथ गरम दल के नेता थे इसलिए वह लाल-लाल पाल तिक्कड़ी के हिस्सा थे। उनका होम रूल आंदोलन जनता के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ और जनता ने उन्हें लोकमान्य की उपाधि दे दी थी।

बाल गंगाधर तिलक ने अध्यात्म और धर्म संबंधी अनेक ग्रंथों का पारायण कर रखा था और गीता का थोड़ा बहुत परिचय उनका तब हो गया था जब अंतिम रोग से पीड़ित अपने पिताश्री को उन्होंने गीता पढ़ कर सुनाई थी। बड़े होने पर जब उनको अंग्रेजी और संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान हो गया तो उन्होंने गीता का अध्ययन किया और गीता की अनेक टीकाएं और भाष्य भी पढ़ें, तब उनके हृदय में यह प्रश्न बार-बार उठ खड़ा होता था कि क्या गीता का महत्व केवल उसके निवृत्ति-प्रधान होने में है जबकि महाभारत में अर्जुन को युद्ध में प्रवृत करने के लिए भगवान कृष्ण ने उन्हें उपदेश दिया था। इससे तो यह सिद्ध होता है कि गीता एक कर्म-प्रधान ग्रंथ है। इस दृष्टि से बाल गंगाधर तिलक ने गीता को अनेक बार पढ़ा और उन्हें लगा कि गीता में जो 'योग' शब्द का प्रयोग हुआ है वह कर्म योग के अर्थ में हुआ है। अतः गीता का प्रतिपाद्य विषय प्रवृत्ति- प्रधान है परंतु फिर भी इसका यह तात्पर्य नहीं कि गीता में मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में निवृत्ति मार्ग का विवेचन बिल्कुल नहीं हुआ है। अतः लोकमान्य तिलक के अनुसार' गीता शास्त्र में इस जगत में प्रत्येक मनुष्य का पहला कर्तव्य यही है कि वह परमेश्वर के शुद्ध स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके उसके द्वारा अपनी बुद्धि को जितना हो सके निर्मल और पवित्र कर लें ।

परंतु यह गीता का मुख्य विषय नहीं है। युद्ध के आरंभ में अर्जुन कर्तव्य मोह में फंसा था कि युद्ध करना भले ही क्षत्रिय धर्म ही हो,परंतु कुल क्षय आदि से घोर पातक होने से जो युद्ध मोक्ष प्राप्ति रूप आत्म कल्याण का नाश कर डाले उस युद्ध को करना चाहिए या नहीं? गीता में यह प्रतिपादन किया गया है एक तो कर्म कभी छूटता ही नहीं है दूसरा उनको छोड़ना भी नहीं चाहिए। गीता में ज्ञान-मूलक भक्ति-प्रधान कर्म योग का ही प्रतिपादन किया गया है कि कर्म करने पर भी कोई पाप नहीं लगता और कर्म करने से मोक्ष भी मिल जाता है।

गीता रहस्य की प्रस्तावना : बाल गंगाधर तिलक जी ने अपने ग्रंथ गीता रहस्य की एक विशद प्रस्तावना लिखी है जिसमें उन सब बातों का विस्तार से वर्णन किया है जिनके आधार पर उन्होंने अपनी बात न केवल वेदांत, उपनिषदों आदि से समर्थित की है साथ ही उन्होंने पश्चिमी विचारकों के विचारों को उदधृत भी किया है । उन्होंने अपनी इस प्रस्तावना को इन पंक्तियों से आरंभ किया है :-

'संतों की उच्छिष्ट उक्ति है मेरी बानी
जानू उसका भेद भला क्या, मैं अज्ञानी।।'

उनका कहना है कि संत -महात्माओं और ऋषि मुनियों के सर्वोत्कृष्ट ज्ञान के समक्ष भला मुझे अज्ञानी की क्या बिसात? यह दोहा उनकी विनम्रता का ही परिचायक है। वरन् बाल गंगाधर तिलक जी के अकूत ज्ञान को देखना समझना हो तो उसके लिए उनका कोहिनूर हीरा-सा अमूल्य ग्रंथ गीता रहस्य वह ज्ञान मंजूषा है जिसमें उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता जी की विवेचना और व्याख्या करने के लिये न केवल समूचे वैदिक साहित्य को आधार बनाया है बल्कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान भंडार का भी विवेचन किया है, यहीं नहीं, पश्चिमी मनीषियों द्वारा रचित ज्ञान साहित्य को भी साथ रखा है और गीता की विवेचना में पश्चिमी ज्ञान साहित्य का भी विश्लेषण किया है। ऐसी महान कार्य कोई महामानव ही कर सकता है।

श्रीमद्भागवत गीता मुख्यतः एक कर्म प्रधान ग्रंथ है, अपनी इस मान्यता को पुष्ट करने के लिए उन्होंने समूचे विश्व के ज्ञान साहित्य को अपने मानस के पार्श्व में सजा रखा था और अपने गीतारहस्य ग्रंथ में उन्होंने उसमें से चुन चुन कर मणियों को यथास्थान उपयोग करते गये।

इस संदर्भ में उन्होंने पश्चिम के इस मत का खंडन किया है कि कर्म-अकर्म विवेक अथवा नीति शास्त्र संबंधी नियमों का विवेचन करता ग्रंथ सबसे पहले यूनानी तत्ववेत्ता एरिस्टोटल ने

लिखा है। वह लिखते हैं कि हमारा मत है कि एरिस्टोटल से भी पहले इन प्रश्नों पर विचार महाभारत एवं गीता में हो चुका था। प्रसिद्ध पश्चिमी तत्ववेत्ता उनके इस ग्रंथ में स्थान पा गये हैं।

बाल गंगाधर तिलक का गीता रहस्य का तात्पर्य यह था कि वह यह सिद्ध करना चाहते थे कि गीता का प्रमुख विषय कर्म–प्रधान था न कि निवृत्ति प्रधान। इसलिए सब से पहले तो उन्होंने गीता रहस्य ग्रंध का शीर्षक ही रखा है 'श्रीमद्भागवतरहस्य अथवा कर्मयोगशास्त्र।'

दूसरी बात जिस पर वह जोर देते हैं वह यह है कि अर्जुन मोहवश् कहने लगा कि पिता–सम पूज्य वृद्ध और गुरु जनों, भाई–बंधुओं और मित्रों को मार कर और अपने कुल का क्षय कर राज्य का एक टुकड़ा पाने के लिए घोर पाप किया जाए क्या यही क्षत्रिय धर्म है कि भाई को मारो, गुरु को मारो। इससे मेरी आत्मा का कल्याण कैसे होगा? 'तभी श्री कृष्ण ने स्वयं उसे उपदेश दिया और अंत में 18वें अध्याय में श्री कृष्ण अर्जुन से पूछते हैं : – 'हे अर्जुन! तेरा अज्ञान–मोह अभी तक नष्ट हुआ कि नहीं? इस पर अर्जुन कह उठते हैं,' हे अच्युत, स्व–कर्तव्य संबंधी मेरा मोह और संदेह नष्ट हो गया है। अब मैं आपके कहे अनुसार कर्म करूंगा। इस संदर्भ में बाल गंगाधर तिलक अपने मंतव्य की पुष्टि में यह कहते हैं कि इससे यह सिद्ध होता है कि गीता एक कर्म–प्रधान ग्रंथ है।

गीता के बारे में उनका यह भी कहना है कि गीता चिंतन उन लोगों के लिए नहीं है जो स्वार्थ पूर्ण सांसारिक जीवन बिताने के बाद अवकाश में गीता या पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं। व्यक्ति को सिर्फ और सिर्फ अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए और कर्मों का फल अवश्य मिलता है। वैसे भी वह गीता को कर्म प्रधान इसलिए भी सिद्ध करना चाहते थे क्योंकि तत्कालीन समय जनजागरण का समय था, भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने का आंदोलन आरंभ हो चुका था और जन जन को उस आंदोलन से जोड़ना जरूरी था और उसके लिए जरुरत थी जागृति का संचार करने–आंदोलन के रूप में कर्म करने की। इस संदर्भ में गीता जैसा तेजस्वी ग्रंथ को वह संजीवनी बनाना चाहते थे। वैसे भी गीता तो भारतीय आत्मा में समायी थी, अतः उस समय समय की मांग कर्म था निवृत्ति मार्ग नहीं था कि संसार का त्याग कर संन्यास ले लो। वह तो उस समय पलायन होता। अतः लोकमान्य तिलक जी के उस समय मानस में चल रहा था कि स्वाधीनता आंदोलन में अधिकाधिक जनता की सहभागिता के लिए उस समय के थके हुए समाज को आकर्षित करने के लिये साकार सोच की बहुत बड़ी भूमिका थी। उनके धुआंधार राजनीतिक जीवन में उन्हें समय नहीं मिल पाता था। अतः जैसे ही उन्हें ब्रिटिश शासकों ने देशद्रोह के अपराध में छः वर्ष के लिए माण्डले जेल भेजा, उन्होंने उस नकारात्मक समय को साकार रुप दे कर जेल में गीता रहस्य की रचना कर डाली। जैसे भगवान कृष्ण का भी कारावास में जन्म हुआ था। उसी तरह भगवान कृष्ण की गीता जी को उस कारावास में एक नया प्रकाश मिला अर्थात् गीता रहस्य का जन्म कारावास में ही हुआ। यह भी क्या महज एक संयोग था कि गीता रहस्य की रचना कारावास में हुई अथवा अप्रत्यक्ष रूप से भगवान कृष्ण द्वारा किया गया एक नया प्रयोग था?

कौरव–पांडव युद्ध के समय जब अर्जुन उद्विगन हो गया तो भगवान ने उन्हें स्वयं उपदेश दिया और उसके मोह और संशय को दूर कर उसे कर्म में प्रवृत्त किया, इसके लिए इस संदर्भ में शंकराचार्य का गीता भाष्य का हवाला देते हुए कहा है कि वह भी गीता में प्रवृति मार्ग को प्रधान्य देते हैं अर्थात् ज्ञानी मनुष्य को ज्ञान के साथ–साथ मृत्यु पर्यन्त सब धर्म–विहित कर्म करना चाहिए। कर्म का कितना महत्व है,इस संदर्भ में तिलक जी ने अनेक अंग्रेजी साहित्यिक कृतियों की व्याख्या की है, यहां हम बस एक उदाहरण देना चाहते हैं जिसकी लोकमान्य तिलक ने अर्जुन के संदर्भ में व्याख्या की है। अंग्रेजी के विश्व प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर का एक क्लासिक त्रासदी नाटक है 'हैमलेट'। हैमलेट नाटक का नायक हैं और उसके जीवन में भी अर्जुन की भांति मोह और संदेह की स्थिति आती है। संक्षेप में, इसका कथा सूत्र यह है कि 'डेनमार्क देश के राजपुत्र हैमलेट के चाचा ने अपने बड़े भाई का वध कर हैमलेट की माता से विवाह कर लिया था और खुद सम्राट बना बैठा था। हैमलेट के मन में यह संशय उत्पन्न होता है कि ऐसे पापी चाचा का वध कर पुत्र धर्म के अनुसार अपने पिता के ऋण से मुक्त होना चाहिए अथवा उस राजा पर दया करे? अनिश्चय की इस स्थिति के कारण उसके अंतःकरण की क्या दशा हुई, वर्णन करना कठिन है। उन्हें कृष्ण जैसा कोई मार्गदर्शक नहीं मिला और अपने संदेह की चिंता में वह पागल– जैसा हो गया और उस उलझन में ही उसका दुखद अंत होता है। इस नाटक की एक पंक्ति विश्व प्रसिद्ध है,To be or not to be, this is the question- इस नाटक के एक से अधिक हिंदी अनुवाद हुए हैं जिसमें इस पंक्ति का एक अनुवाद इस प्रकार हुआ है, श्जीना है या मरना है, तय करना है, यहीं प्रश्न है, इस संदर्भ में लोकमान्य तिलक जी सही कहते हैं कि हैमलेट को कृष्णा जैसा मार्गदर्शक नहीं मिला, हालांकि कि नाटक में हैमलेट को उसके पापी चाचा के वध करने के कई अवसर मिलते हैं पर अपने अनिर्णय के कारण वह आवश्यक कर्म नहीं कर पाता है।

गीता रहस्य का हिंदी अनुवाद : लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य की रचना मराठी भाषा में की और उसका हिंदी पाठकों से परिचय कराने का श्रेय हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार और पत्रकार पंडित माधवराव स्प सप्रे जी को जाता है। गीता रहस्य का पहला अनुवाद हिन्दी में ही हुआ और हिंदी में उस का अनुवाद होते ही गीता रहस्य की धूम मच गयी। बाद में उसका कई भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ किंतु हिंदी अनुवाद लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के जीवनकाल में हुआ और प्रकाशित भी हो गया। हिंदी में गीता रहस्य की भूमिका में पंडित माधवराव सप्रे ने लिखा है कि लोकमान्य तिलक ने यह इच्छा प्रकट की थी कि मूल ग्रंथ में प्रतिपादित सब भाव ज्यों के त्यों हिंदी में व्यक्त किए जाने चाहिए। इसलिए अनुवादक ने अपने अनुवाद में यह प्रयत्न किया है कि मूल ग्रंथ में वर्णित मूल भावों की पूरी की पूरी रक्षा की जाए और अनुवाद की भाषा यथासंभव शुद्ध, सरस, सरल और सुबोध हो।

गीता रहस्य के अपने अनुवाद में सप्रे जी यह भी कहते हैं कि हो सकता है विषय की कठिनता और भावों की गंभीरता के कारण

मेरी भाषा कहीं कहीं क्लिष्ट और दुर्बोध हो गई हो और संभव है इस अनुवाद में 'मराठी पन' का स्वाद भी मिल जाए क्योंकि मेरी मातृभाषा मराठी है और मैं हिंदी का कोई धुरंधर लेखक भी नहीं हूं। इसलिए स्मरण रहे कि यह गीता रहस्य का अनुवाद है और अनुवाद आखिर अनुवाद ही होता है इसमें वह तेजस्विता नहीं आ सकती जो मूल ग्रंथ में है।

वैसे मैंने इसी हिंदी अनुवाद को ही पढ़ा है और मुझे वह अनुवाद बहुत अच्छा लगा है और गीता रहस्य में कहीं गई बातें सब समझ में आती हैं। पंडित माधवराव सप्रे हिंदी के कोई मामूली साहित्यकार नहीं थे। हिंदी की पहली कहानी का श्रेय उन्हीं को जाता है और उन्होंने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के मणिकांचन संयोग से हिंदी भाषा को अनुपम दिशा दी है।

गीता रहस्य के प्रकाशन संबंधी प्रस्तावन : गीता रहस्य के आरंभ में प्रकाशकन संबंधी प्रस्तावना से अनेक ऐसे तथ्यों का भी पता चलता है जिससे सामान्यतया पाठक वर्ग परिचित नहीं हैं। मैं यहां केवल एक तथ्य का ही उल्लेख कर रही हूं। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपनी विल तो कर दी थी परंतु उन के निधन के बाद उसको लागू करने में उनके कुछ रिश्तेदारों और कुछ व्यक्तियों ने उन के बेटों की शराफत का लाभ उठा उनकी सम्पत्ति हड़प ली जिसके लिए बेटों को मजबूर हो कर न्यायालय का द्वार खटखटाना पड़ा। जैसाकि संपत्ति विवादों में होता ही है वादियों को न्याय पाने के लिए लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। मुकदमे से तंग आकर लोकमान्य तिलक के बेटे श्रीधर बलवंत तिलक ने आत्महत्या कर ली और आत्महत्या करने से पहले उन्होंने मजिस्ट्रेट के नाम एक पत्र लिख कर बताया कि कैसे बलवंत एक स्वतंत्रचेता व्यक्ति हैं परंतु मुकदमे के कारण उनका दम घुटने लगा है और वह ऐसा जीवन और नहीं जीना चाहते। इन सब से मुक्ति चाहते हैं। रामचंद्र बलवंत तिलक ने गीता रहस्य के चौथे संस्करण की प्रस्तावना में यह भी बताया है कि इस मुकदमे के कारण गीता रहस्य के संस्करण प्रकाशित करने में भी विलंब हुआ है। वास्तव में लोकमान्य तिलक के सुपुत्र श्रीधर बलवंत तिलक की आत्माहत्या की घटना से मुझे बेहद आहत किया था।

इसी प्रस्तावना से यह भी पता चला कि जब वर्ष 1914 में लोकमान्य तिलक जी को माण्डले जेल से छोड़ा गया तो उस समय उन्हें गीत रहस्य की पांडुलिपि नहीं लौटाई गई थी। जब काफी समय तक जेल अधिकारियों ने उनकी हस्तलिखित पुस्तक नहीं लौटाई तो लगने लगा था कि शायद ब्रिटिश सरकार उसे लौटायेगी नहीं। जब लोकमान्य तिलक जी के ध्यान में यह बात लाई गई कि सरकार की नियत कुछ ठीक नहीं लगती है तो लो. कमान्य तिलक जी ने कहा कि 'डरने की कोई बात नहीं है। यदि सरकार ग्रंथ नहीं लौटाती तो भी ग्रंथ का मजबून मेरे मस्तिष्क में है। समय मिलते ही मैं शांति से बैठ कर उसे पुनः लिख डालूंगा।' इस प्रकार के आत्मविश्वास से भरे उनके शब्द सुन कर प्रकाशक लिखते हैं, यह है आत्मविश्वास के तेजस्वी भाषा उतरती उम्र वाले अर्थात् 60 वर्ष के वयोवृद्ध गृहस्थी की है और यह ग्रंथ मामूली नहीं बल्कि गहन तत्व ज्ञान के विषय से भरा हुआ 900 पृष्ठ का है। सौभाग्य से ही सरकार ने बाद में पुस्तक की पांडुलिपि दे दी और लोकमान्य तिलक के जीवन काल में ही गीता रहस्य के तीन संस्करण प्रकाशित हो गए।।

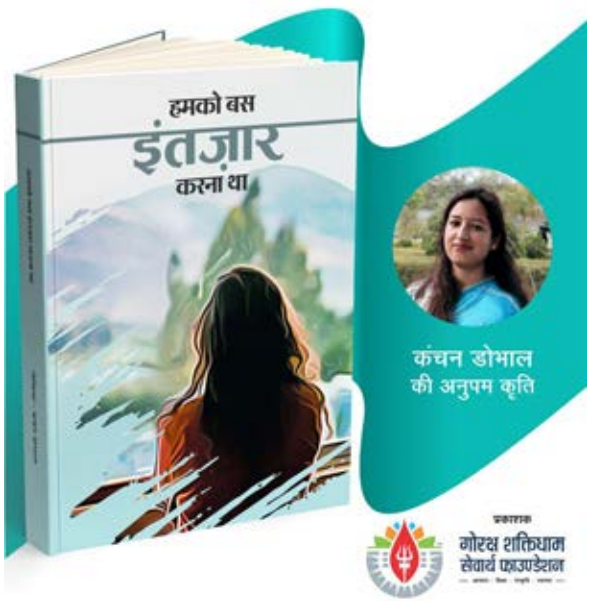

Flipkart amazon पर उपलब्ध

संत नामदेव

मंजिरी 'निधि'
स्वतंत्र लेखन
बदौड़ा, गुजरात

भारत को संत महात्माओं की भूमि कहा जाता है। यहाँ अनेक संतों ने जन्म लिया। इन्हीं संतों के अच्छे आचरण, सदव्यवहार और कार्यों द्वारा समाज को एक नई दिशा मिली। आत्म बोध हुआ सउनमें से एक थे संत तुकाराम स आपकी अलौकिक रचनाओं ने, भजनों ने समाज को नई विचारधारा दी। इनकी अभंग वाणी जिसमें 2500 अभंग मिलते हैं। इनमें से करीब 125 हिन्दी भाषा के और 62 पंजाबी भाषा के हैं सअभंग एक ऐसा छंद जिसमें हम भगवान विठ्ठल जो कि विष्णु जी के दूसरे रुप हैं उनकी महिमा का वर्णन होता है। इनके अभगों का सार हैं कि आपको मनुष्य जीवन मिला है तो आप ईश्वर की अनन्य भक्ति कीजिये। यही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन है, यह शरीर नश्वर है। यह काया दिन प्रतिदिन क्षीण हो रही है। तो इसी क्षण से अपने आप को ईश्वर भक्ति में तल्लीनकरना है। ऐसा सुनने में आता है कि संत नामदेव जी का कीर्तन इतना जबरदस्त होता था कि विठ्ठल जी कि पाषाण कि मूर्ति भी डोलने लगती थी। यही कारण था कि लोग इन्हें विठ्ठल जी के परम सखा भी कहते थे।

आप वारकरी संत कवि थे। आपने वारकरी सम्प्रदाय का बहुत प्रचार प्रसार किया। वारकरी याने याने तीर्थ स्थान के फेरे लगाने वाला और करी याने पूरा करने वाला।

संत नामदेव जी का जन्म महाराष्ट्र के पंढ़रपुर गाँव में एक दर्जी दाना शेट्टी के घर कार्तिक शुद्ध एकादशी रोहिणी नक्षत्र में 26 अक्टूबर 1270 को हुआ स आपकी माँ का नाम गोणाई था। आपका पूरा नाम नामदेव दामा शेट्टी रेलेकर था। पंढ़रपुर में जन्मे थे साथ हि परिवार वाले विट्ठल जी के अनन्य भक्त थे इसी कारण आप को भी ईश से एक विशिष्ट लगाव हो गया था। इनकी माँ इन्हें रोज अपने साथ मंदिर ले जाती। जिसके कारण इनकी विट्ठल में भक्ति बढ़ती ही गई। उम्र के सातवे वर्ष में इन्होंने पेड़ों कि जोड़ी बनाकर, अभंग गाकर नृत्य

करना शुरू किया।

इनकी शादी सिर्फ 11 वर्ष कि उम्र में राजाई सावरकर के साथ हुई। संत जनाबाई इनकी अनन्य भक्त थीं स भगवान कि भक्ति में इनकी तन्मयता बढ़ती ही चली गई और परिवार छूटता चला गया।

इन्होंने कर्मकांड, जातपात इन सभी को दूर करने के लिये अपने अभंगों द्वारा लोगों को समझाया स जातपात को लेकर इनका कहना था कि हम सब उस परमसत्ता कि संतान हैं। उसी नए हम सभी को बनाया है। और व्य स्वतं सभी जीवों में उपस्थित है तो फिर जातपात का व्यवहार क्यूँ? इन्होंने समाज को सतत नामस्मरण का सरल रास्ता दिखाया स इन्होंने अपने कीर्तनों के माध्यम से लोगों में ज्ञान के दीप भी जलाए और पंढ़रपुर कि महिमा का खूब बखान किया।

26 वर्ष कि आयु में इन्होंने महाराष्ट्र छोड़ा और 54 वर्ष तक भागवत धर्म के प्रचार प्रसार हेतु दक्षिण और उत्तर की यात्रा पर चल पड़े। काशी, पुष्कर, दिल्ली और फिर पंजाव तक ये धर्म प्रचार करते रहे। पंजाब में इनकी मुलाकात बाबा बोहरदास जी से हुई। जब वे पंजाब के गाँव पहुँचे तब वहाँ पानी का अकाल था। लोग पानी के बिना मर रहे थे। इन्होंने लोगों के बीच जागरूकता जगाई। तालाब खुदवाए। कुएँ खुदवाए, लोगों को राहत मिली। लोग इनके अभंग सुनने आने लगे। अपना कीर्तन, अपने अभंग लोगों को समझ आना चाहिए इसलिए इन्होंने पंजाबी सीखी। इनके कीर्तन सुनकर लोगों के मन में श्रद्धा निर्माण हुईस इनके कीर्तनों का ऐसा असर हुआ कि गावों में लोगों के व्यसन छूट गये और कई कुरुतियाँ भी समाप्त हुईं स आज भी जब आप गुरुग्रंथ साहब पढ़ेंगे तो गुरुमुखी लिपि में आपको इसमें इनके 62 अभंग पढ़ने को मिलते हैं। सिख सम्प्रदाय में सिख इन्हें 'भगत नामदेव', 'बाबा नामदेव' या सिर्फ 'बाबाजी' के नाम से जानते हैं स आज भी पंजाब में कई दुकानों पर इनकी तस्वीर जिसमें बढ़ी दाढ़ी, हाथ में जाप कई माला, सर पर बालों का जूडा ऐसा फोटो देखनेको मिलता है। पंजाब में इनकी स्मृति में घुमान गाँव में इनके नाम का गुरुद्वारा भी है जिसका नाम नामदेव गुरुद्वारा। पंजाब से ये 80 वर्ष की आयु में ये फिर पंढ़रपुर आये और 30 जुलाई 1350 को पंढ़रपुर मंदिर में भगवान विठोबा के सामने महाद्वार में समाधि ली। इसका कारण कि जो भी भगवान विठ्ठल के दर्शन करने आयेगा उसके पैरों की रज मेरे माथे लगती हि रहेगी ऐसा इनके अभंग में भी पढ़ने को मिलता है।

आज भी देखने को मिलता है कि संत नामदेव जी को सभी वर्ग, सभी आयु के लोग उनके अभंग सुनकर उनके कीर्तिनों को सुनकर बड़े पैमाने में सामाजिक हित हेतु कार्यरत हैं।

हरि नाम सकल भुवन ततसारा।
हरि नाम नामदेव उतरे पारा।।

शिव का सती परित्याग

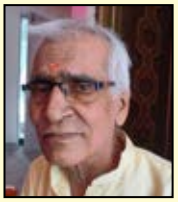

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

किन्हिं कठिन प्रण शिव मनमाँहीं ।
एहि तन सती भेंट अब नाहीं ।।
सति के कपट चरित प्रभु जानी ।
सीता रूप धरि सती भवानी ।।
अब जो प्रीति करौं सति तन सौं ।
गिरिहौं बिमल भगति मारग सौं ।।
शिव विचार किन्हीं मनमाँहीं ।
एहि तन सती भेंट अब नाहीं ।।
भइ नभबानि सुनहु त्रिपुरारी ।
धन्य धन्य तुम पन्नगधारी ।।
अस प्रन तुम बिन कौन निभावहिं ।
शेष शारदा तव गुन गावहिं ।।
बिकल भई सुनि सति नभबानी ।
स्वामी कौन कठिन प्रन ठानी ।।
बार बार पूछी शम्भू से ।
पर शिव ने नहिं कहा सती से ।।
स्वामी मोर कपट पहिचानी ।
जान गई तब सती भवानी ।।
स्वामी करुणासिन्धु अगाधू ।
प्रकट न कहहिं मोर अपराधू ।।
प्रभु माया शिव किन्हिं प्रनामा ।
सती सहित पहुँचे निज धामा ।।
सुमिरि राम समुझि पनु आपन ।
बट तर बैठि गहे पद्मासन ।।
लागि समाधि अखंड अपारा ।
सती हृदय लगि बज्र कुठारा ।।
ब्याकुल सती बसहिं कैलाशा ।
नित नित सति मन बढ़ै निराशा ।।

वैयक्तिक व मानसिक रूप से भ्रटाचार से मुक्ति जरूरी

कृष्ण कुमार यादव

भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

'सत्यमेव जयते'– प्राचीन भारतीय साहित्य में मुंडकोपनिषद् से लिया गया यह सूत्र वाक्य आज भी जीवन मूल्यों की समग्र व्याख्या करता है। 'सत्य की विजय हो' का विपरीत होगा 'असत्य की पराजय हो।' सत्य–असत्य, सभ्यता के आरम्भ से ही धर्म एवं दर्शन के केंद्र–बिंदु बने हुये हैं। रामायण में भगवान श्री राम की रावण पर विजय को असत्य पर सत्य की विजय बताया गया और प्रतीकस्वरूप हम आज भी इसे दशहरा पर्व के रूप में मनाते हैं तथा रावण का पुतला जलाकर सत्य की विजय का शंखनाद करते हैं। महाभारत में भी भगवान श्री कृष्ण के नेतृत्व और पाँच पाण्डवों की सौ कौरवों और अट्ठारह अक्षौहिणी सेना पर विजय को सत्य की असत्य पर विजय बताया गया। कालांतर में बौद्ध और जैन धर्मों ने भी सत्य को पंचशील व पंचमहाव्रत का प्रमुख अंग माना।

'सत्य' एक बेहद सात्विक पर जटिल शब्द है। ढाई अक्षरों से निर्मित यह शब्द उतना ही सरल है जितना कि 'प्यार' शब्द, पर इस मार्ग पर चलना उतना ही कठिन है जितना कि सच्चे प्यार के मार्ग पर चलना। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, जिन्हें सत्य का सबसे बड़ा व्यवहारवादी उपासक माना जाता है ने सत्य को ईश्वर का पर्यायवाची कहा। उनके शब्दों में–''सत्य ही ईश्वर है एवं ईश्वर ही सत्य है।'' यह वाक्य ज्ञान, कर्म एवं भक्ति योग की त्रिवेणी है। सत्य की अनुभूति अगर ज्ञान योग है तो इसे वास्तविक जीवन में उतारना कर्मयोग एवं अंततः सत्य रूपी सागर में डूबकर इसका रसास्वादन लेना ही भक्ति योग है। शायद यही कारण है कि लगभग सभी धर्म सत्य को केन्द्र बिन्दु बनाकर ही अपने नैतिक और सामाजिक नियमों को पेश करते हैं।

सत्य का विपरीत असत्य है। सत्य अगर धर्म है तो असत्य अधर्म का प्रतीक है। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं–''जब–जब इस धरा पर अधर्म का अभ्युदय होता है तब–तब मैं इस धरा पर जन्म लेता हूँ।'' भारत सरकार के राजकीय चिन्ह अशोक–चक्र के नीचे लिखा 'सत्यमेव जयते' शासन एवं प्रशासन की शुचिता का प्रतीक है। यह हर भारतीय को अहसास दिलाता है कि सत्य हमारे लिये एक तथ्य नहीं वरन् हमारी संस्कृति का सार है। साहित्य, फिल्म

एवं लोक विधाओं में भी अंततः सत्य की विजय का उद्घोष होता है ।

सत्य के विलोम असत्य का सबसे व्यापक रूप आज भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार एक प्रकार की बेईमानी या आपराधिक अपराध है जो किसी व्यक्ति या संगठन द्वारा किया जाता है जिसे अधिकार के पद पर सौंपा जाता है, ताकि किसी के व्यक्तिगत लाभ के लिए अवैध लाभ या शक्ति का दुरुपयोग किया जा सके। ऐसा नहीं है कि समाज में पहले भ्रष्टाचार नहीं था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में 27 प्रकार के भ्रष्टाचारों का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि–''जिस प्रकार जिह्वा पर रखे गये शहद का स्वाद न लेना मनुष्य हेतु असम्भव है, उसी प्रकार सरकारी कर्मचारी हेतु राजकोष के एक अंश का भक्षण न करना असम्भव है।'' भ्रष्टाचार एक ऐसा विष बेल है जो समाज में नित्य फैल रहा है। इसे खत्म करने हेतु कड़े से कड़े दण्ड अपनाये गये, पर इसका विष और भी गहरा होता गया। यही कारण है कि एक दौर में भ्रष्टाचार को विश्वव्यापी समस्या कहकर इसका सामान्यीकरण करने की कोशिश की गयी तो देखते ही देखते भ्रष्टा. चार को शिष्टाचार का पर्याय माना जाने लगा। निश्चिततः जब आप किसी व्यक्ति से काम निकलवाने हेतु उसे रिश्वत न देकर उसके जन्म दिन पर एक मँहगा और खूबसूरत उपहार प्रदान करते हैं तो आप अपनी बुरी नीयत को छुपाने का एक शिष्ट तरीका अपना रहे होते हैं।

वस्तुतः भ्रष्टाचार स्वयं व्यवस्था के अन्दर से ही जन्म लेता है। नियमों की जटिलता, न्याय में देरी, जागरूकता का अभाव, शार्टकट तरीकों से लक्ष्य पाने की होड़ और मानव का स्वार्थी स्वभाव ही इसका मूल कारण है। इन सबसे निपटने हेतु स्वतन्त्र न्यायपालिका, स्वतन्त्र प्रेस, लोकायुक्त व लोकपाल संस्था, सतर्कता आयोग, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जैसी संस्थायें गठित की गयी। वर्तमान में उदारीकरण व्यवस्था के द्वारा लाइसेंस–परमिट राज की समाप्ति, सूचना–तकनीक के बढ़ते दायरे के साथ हर किसी पर मीडिया की नजर, सिटिजन–चार्टर के माध्यम से विभिन्न विभागों द्वारा नागरिकों को जागरूक बनाना, ई–गर्वनेस के द्वारा प्रशासन में कागजी बोझ कम करके कम्प्यूटराइजेशन द्वारा पारदर्शिता लाना व तत्काल सेवा मुहैया कराना, सिविल सोसायटी द्वारा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना, सूचना का अधिकार लागू करने व स्टिंग आपरेशन जैसे तत्वों के द्वारा भी भ्रष्टाचार पर काबू करने के प्रयास किये गये हैं। सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन कर इनका डिजिटलीकरण किया जा रहा है। इससे लोगों को प्राप्त होने वाले अनुदान, सामाजिक सुरक्षा योजना राशि और सब्सिडी डीबीटी के माध्यम से सीधे लाभार्थी के खाते में जाता है। विभिन्न सेवाओं को मोबाइल और आधार से जोड़ने से भी व्यवस्था में पारदर्शिता आई है और बिचौलियों का खात्मा हुआ है। भ्रष्टाचार पर रोक लगाने हेतु विश्व स्तर पर सन् 1995 में भ्रष्टाचार बोध सूचकांक का गठन किया गया है। यह प्रत्येक वर्ष सभी देशों को भ्रष्टाचार के आधार पर रैंक देता है जिसमें 0 का अर्थ है सबसे भ्रष्ट देश जबकि 100 से आशय भ्रष्टाचार मुक्त देश से है। वर्तमान समय में लगभग 180 देशों के मध्य यह रैंकिंग की जाती है।

भ्रष्टाचार उस दीमक की तरह है जो समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला करता है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का आईना है जो यह दिखाता है व्यक्ति स्वार्थ, लालच, लोभ, असंतुष्टि, आदत और मनसा जैसे विकारों की वजह से कैसे मौके का फायदा उठाकर अवसरवादी बनकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। यही कारण है कि इसे समाप्त करने हेतु हमें उस मर्म पर चोट करनी होगी, जहाँ से भ्रष्टाचार रूपी गेंद उछलती है, न कि उस जगह जहाँ पर वह गिरती है। मूलतः भ्रष्टाचार एक नैतिक एवं वैयक्तिक समस्या है। समाज एवं व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का पतन होने के कारण भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला है। आज व्यक्ति किसी भी अनुचित तरीके को अपनाकर अपना काम निकालना चाहता है। बढ़ती उपभोक्तावादी संस्कृति एवं भौतिकवाद – समाज में बढ़ती उपभोक्तावादी संस्कृति एवं भौतिकवाद भ्रष्टाचार का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। जब तक हर व्यक्ति स्वयं को इस दोष से मुक्ति दिलाने का प्रयास नहीं करता तब तक भ्रष्टाचार उन्मूलन प्रभावी रूप में नहीं संभव होगा। भगवान श्री राम अन्त तक रावण के दस सिरों को तीरों से बींधते रहे पर उस पर कोई फर्क नहीं पड़ा, अन्ततः विभीषण के इशारे पर उन्होंने रावण की नाभि पर तीर चलाया और उसे धराशायी करने में सफल रहे। ऐसा ही भ्रष्टाचार के साथ भी है।

भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या भी है। इससे निजात पाने हेतु जरूरी है कि लोग वैयक्तिक व मानसिक रूप से भ्रष्टाचार से मुक्त हों। भ्रष्टाचार किसी व्यक्ति विशेष या समाज की नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र की समस्या है। इसका निदान केवल प्रशासनिक स्तर पर हो सके ऐसा संभव नहीं है। इसका समूल विनाश सभी के सामूहिक प्रयास के द्वारा ही संभव है। इसके लिए केंद्रीय स्तर पर राजनीतिक इच्छा–शक्ति का प्रदर्शन भी नितांत आवश्यक है। महात्मा गाँधी जी ने सत्याग्रह का प्रतिपादन करते हुये कहा था कि इसे पूर्ण रूप में अपनाने हेतु जरूरी है कि सर्वप्रथम मानव अपने दुराग्रहों से मुक्ति पाये एवं तत्पश्चात दूसरों हेतु एक आदर्श उपस्थित कर उन्हें सत्य की राह दिखाये। इस सम्बन्ध में गाँधी जी का एक सूत्र वाक्य दृष्टव्य है–

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं ।
शायद पूर्ण निष्पाप, तुम भी नहीं।।

दर्शन की भाषा में कहें तो हर व्यक्ति ईश्वर का चित् होने के कारण सत् है। उसके दुराग्रह ही उसे बन्धनों में बाँधते हैं। इन बन्धनों से मुक्ति के विभिन्न रास्ते बताये गये हैं, जिसको अपनाने के पश्चात व्यक्ति मोक्ष की अवस्था को प्राप्त करता है। मोक्ष प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति इस संसार के पुनर्जन्म चक्र से मुक्त हो जाता है।

यह सत्य है कि भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में काफी गहरी हैं, पर इतनी भी गहरी नहीं कि कोई चाहकर भी उन्हें नहीं हिला सके। यही कारण है कि भ्रष्टाचार पर पड़ी हर चोट उसे झकझोर कर रख देती है। सत्य भले ही कम चोट करता है, पर जब करता है तो वह बेहद तीक्ष्ण होती है। जरूरत भ्रष्टाचार को एक लाइलाज रोग मानकर शान्त बैठने की नहीं, वरन् इसे समाप्त करने हेतु प्रयास करने की है–

कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर को तबियत से उछालो तो यारों ।।

रिश्तों की नाज़ुक डोर को मत समझो कमज़ोर

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

मानव एक सामाजिक प्राणी है अतः जन्म लेते ही वह समाज का एक अंग बन जाता है, साथ ही वह अनेकों सामाजिक रिश्तों से जुड़ जाता है जैसे दादी, बाबा, नानी, नाना, चाचा, ताऊ, भाई, बहन आदि सभी का अपना प्यारा बन जाता है क्योंकि यह सभी रिश्ते ईश्वर प्रदत्त होते हैं, अतः इन्हें रक्तसंबंधी रिश्तों के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही कुछ ऐसे रिश्ते भी होते हैं जो जीवन यात्रा की राह में मिलते रहते हैं जैसे गुरु, मित्र, पड़ोसी एवं विवाहोपरांत बनने वाले रिश्ते भी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, इनसे जीवन में नयी खुशियां आती हैं एवं जीवन जीने का तरीका भी बदल जाता है, साथ ही नई जिम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं। रिश्ते बनाना और उन्हें निभाना, दोनों ही जीवन को आनंदमय एवं ऊर्जित रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

भारत भूमि पर और भारतीय सभ्यता में जन्म होना हम सभी के लिए अति गौरव और सौभाग्य की बात है। परिवार नामक संस्था का सफल संचालन हमारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की सबसे खूबसूरत कड़ी है जो किसी अन्य देश में देखने को नहीं मिलती है। यहां पर संपूर्ण परिवार में चार पीढ़ियों का परस्पर सामंजस्य देखने को मिल जाता है जहां परिवारों में जीवन के हर सुख की घड़ी कई गुना अधिक आनंद प्रदान करती है तो वहीं दुख की कठिन घड़ी परस्पर प्रेम, समझ दारी और सद्भाव से बंटकर अल्प हो जाती है, अतः खुशी और आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए हमें अपने रक्त संबंधी रिश्तों के साथ–साथ सामाजिक रिश्तों एवं मानवीय रिश्तो को भी बहुत संभाल कर रखने की आवश्यकता है। इसी सन्दर्भ में रहिमन जी ने सच ही कहा है

रूठे स्वजन मनाइए, ज्यों रूठे सौ बार,
रहिमन पुनि पुनि पोहिये, जैसे मुक्ता हार।

यूं तो रिश्तो की डोर बहुत ही नाजुक होती है इन्हें बनाने, संवारने और निभाने में बहुत समय लगता है परन्तु आपसी मतभेदों, अविश्वास एवं कटु व्यवहार से इनके टूटने में देर नहीं लगती है। रिश्तें चाहें कोई भी हो सदैव वाणी में मिठास, हृदय में प्रेम एवं निष्ठा और दिमाग में विश्वास एवं समझदारी के इशारों से चलते यदि हम इन सभी को अपना कर अपने व्यवहार में शामिल कर लें तो हर रिश्ते को बखूबी से संभालने की चाभी मुट्ठी में आ जाएगी। पारिवारिक रिश्ते निभाने के लिए सर्वप्रथम परिवार के महत्व को समझना आवश्यक है, परिवार हम सब के लिए के एक वृक्ष की भांति है जिसकी शाखाएं स्वतंत्र रूप से अपनी सीमा में अलग–अलग दिशाओं में बढ़ती हैं परंतु सब को जोड़ने वाली जड़ होती है, परिवार के बुजुर्ग परिवार रूपी वृक्ष के आधार रूपी जड़ के समान होते हैं, जिनके संरक्षण एवं मार्गदर्शन में भावी पीढ़ी आगे बढ़ती है, साथ ही उन्हें माता पिता के रूप में दो मजबूत स्तंभ मिलते हैं जिनके प्यार की छांव तले वे पलते, बढ़ते हैं और उन्नति करते हैं। माता–पिता अपने बच्चों का हर तरह से ख्याल रखते हैं और समाज में जीने की कला भी सिखाते हैं एवं अच्छे बुरे का ज्ञान कराते हैं साथ ही अपने बच्चों को एक सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराते हैं। यदि परिवार का कोई भी सदस्य अपने परिवार रूपी वृक्ष से अलग हो जाता है तो उसकी स्थिति उस पत्ते के समान हो जाती है जो डाल से टूट कर इधर–उधर भटकता रहता है। परिवार के सफल संचालन हेतु परस्पर प्रेम एवं निष्ठा का समावेश होना, रिश्तो का मूल्य समझना एवं उन्हें निभाना नितांत आवश्यक है। रहीम दास जी कहते हैं

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय,
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय।

हम अपने रीति रिवाज, त्यौहार, उत्सव अपने रिश्तेदारों पड़ोसियों एवं अन्य प्रियजनों के साथ मनाते हैं तो खुशियों की सौगात से जीवन आनंद से परिपूर्ण हो जाता है और यह खुशियां एवं अपनों का साथ जीवन की दुरुह राह को सरल और सुगम बना देती हैं, यहां तक कि वृद्धावस्था में भी यह सुख और आनंद के अवसर हृदय को आह्लादित करते रहते हैं। यदि हम अपने समाज एवं परिवार के प्रति अपने दायित्व को समझते हैं तो यह रिश्तो की मिठास भी हमारे जीवन को खुशियों के भंडार से भर देती है और उम्र की प्रत्येक बेला में आनंद उत्साह के साथ जीने की प्रेरणा देती है, अन्यथा जीवन के आखिरी मोड़ पर मायूसी और एकाकीपन का सामना करना पड़ सकता है।

विडम्बना है कि आधुनिक समाज में भागदौड़ भरी जिंदगी एवं भौतिकता की चकाचौंध के कारण लोग स्वार्थी होते जा रहे हैं, यही कारण है कि रिश्तों की महत्ता हाशिए पर जा रही है। वर्तमान समय में कुछ न करके बहुत कुछ पाने की लालसा और जो मिला है उससे भी अधिक पाने की इच्छा की पूर्ति हेतु लोग किसी भी हद तक जाने में गुरेज नहीं करते हैं। स्वार्थपरता, झूठ एवं अविश्वास के चलते रिश्तों की सुंदर डोर को कमजोर बना देते हैं। वह परिवार रूपी मजबूत संस्था से पृथक हो अपना अलग अस्तित्व बनाने का प्रयास करते रहते हैं अर्थात एकल परिवार बनाते हैं जिसमें माता पिता और उनके बच्चे ही होते हैं शेष सभी रिश्ते नगण्य हो जाते हैं और बोझ लगने लगते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे दादी–बाबा के संरक्षण, प्यार एवं नैतिकता की सुन्दर कहानियों से वंचित रह जाते हैं। यही कारण है कि माता–पिता के अतिशय प्यार से उनके अंदर संस्कारों एवं अनुशासन की कमी रह जाती है और उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है क्योंकि माता पिता के प्यार भरे मखमली रिश्तों में जहां पर फिसलन की संभावना होती है, वहीं कठोर अनुशासन और संस्कारों की सीख अप्रिय होने के बावजूद सफल जीवन जीने की कला सिखा जाते हैं। अक्सर समाज में एक ही परिवार में अमीर और गरीब की खाई इतनी गहरी हो जाती है कि दोनों का एक साथ बैठना तो दूर उनका परस्पर मिलना भी नहीं होता है किसी विशेष अवसर पर मिलते भी है तो वह रिश्तों की मिठास को भूलकर आपस में कटे कटे से रहते हैं और पारस्परिक रिश्तों की नाजुक डोर को तोड़ बैठते हैं।

वर्तमान में टूटे और बिखरे संबंधों के बीच आज भी ऐसे महान लोग हैं जो गुमनाम जिंदगी जीते हुए अत्यंत शांत भाव से समाज को जोड़ने में प्रयासरत। हैं क्योंकि वे संबंधों को निभाने में विश्वास रखते हैं, ऐसे लोगों का जीवन किसी श्रेष्ठ साधना और महान यज्ञ से कम नहीं है। एक सुंदर स्वस्थ और आनंदमय समाज के सृजन हेतु रिश्तों को संभालने एवं सहेजनें की आवश्यकता है और उसके लिए संबंधों में मिठास, इमानदारी, प्रेम एवं विश्वास का होना अति आवश्यक है अर्थात रिश्तो की डोर को सुंदर व मजबूत बनाने के लिए दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जो स्वयं को प्रिय हो वरना एक दिन रिश्तों से पीछा छुड़ाते छुड़ाते, एक दिन खुद रिश्ते आप से पीछा छुड़ा लेते है।उस समय पैसा तो बहुत होता है आप के पास,पर प्यार से गले लगाने वाला कोई नहीं होता, आपके कंधे पर हाथ रख के, 'क्यों चिन्ता करते हो मैं हूँ ना' बोलने वाला कोई नहीं होता है। इस लिए कभी कभी अपने रुतबे, ओहदे और सिद्धांतों को एक तरफ रख के, सब में घुल मिल कर जीवन का लुत्फ उठाएं और अपनों को गले लगा कर उन्हें अपनेपन का एहसास कराएं। हो सकता है कि यह कुछ खास पल भविष्य की पुस्तक में आप की किस्मत को स्वर्णिम अक्षरों से अंकित कर दें। अतः सदैव अपनों के साथ रहे और अपनों के पास रहें।

अहोई माता पूजन

हिंदू धर्म में करवा चौथ पर्व के चार दिन के पश्चात अष्टमी तिथि को आंगन को गाय के गोबर से अथवा चावल के घोल अथवा गेरु से लीप कर, पाटले पर कलश की स्थापना की जाती है। संपन्न परिवारों की स्त्रियां चांदी की अहोई माता बनवाकर स्थापना करती है। घर की स्त्रियां इस दिन उपवास रखकर अहोई माता की पूजा अर्चना करती है। उन्हें पूर्ण श्रद्धा के साथ दूध–चावल का भोग अर्पित कर, जल का भरा पात्र सम्मुख रखकर परिवार की महिलाएं कथा श्रवण करती हैं। अहोई माता की पूजा संतान की दीर्घायु एवं पारिवारिक सुख में स्वस्थ जीवन के लिए की जाती है। पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत पूजन अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है।

गौ माता अन्नपूर्णा, जीवन का आधार

डॉ. पूनम माटिया
अध्यक्ष, अंतस्
कवयित्री, शायरा, मंच–संचालिका
स्वतंत्र लेखन
दिल्ली

माँ–सम सुत को पालती, ऋषि–ऋषक उद्धार
गौ माता अन्नपूर्णा, जीवन का आधार

सूरज की है प्रतिनिधि, वसुओं को दे प्यार
आदित्यों की बहना है, शिव भी नन्दी सवार
मन–वांछित फलदायिनी, धरा पे यह उपकार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

भृगु ने द्विज को दान दिया, कामधेनु है नाम
विष्णु किये गोपाला होकर गोसेवा के काम
गो–सेवा तन मन से हो, हो वैतरणी पार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

मलशोधक, अणुरोधक गोबर, है कमला का वास
गौमूत्र दे आरोग्य, धनवंतरी करें निवास
ब्रह्मा विराजे कूबड़ में, गौ–स्पर्श है देव–द्वार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

चन्द्रकिरण अवशोषित करती, स्वर्ण–तत्व दे रोग–निदान
कर ग्रहण तारों की किरणें, ऊर्जित करती वर्तमान
गौ–घृत से यदि हो हवन, हो प्राण–वायु संचार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

घास–फूस खाकर भी माता, मधुमय दूध का देती दान
कण–कण रक्त का पोषित कर हमको करती है बलवान
शुचि–संवेदन, शील–स्रोत, दुग्ध ज्यों अमृत की धार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

हरि अनंत, हरि–कथा अनंता, सो गौरस–व्याख्यान
करते–करते न थकें फिर भी हम अपमान
एक दृष्टि डालें यदि, मिल जाता है सार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

वध निर्दयी कुछ करते जाते, कटती जाती गाय
कामधेनु है कहलाती, फिर भी बच नहि पाय
सूफी–संत–सियाने भक्तों की सुनते नहीं गुहार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

गौवंश अपना विशिष्ट, पश्चिम टिक न पाय
फिर काहे को गऊ अपनी, उपेक्षित–अनाथ रह जाय
दुर्दिन कब तक झेलती, चहूँ ओर अँधियार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

आर्तनाद न सुनता कोई, स्वार्थ ही ललचाय
जिंदा में ही फँसा के काँटा, खाल रहे नुचवाय
वैदिक संस्कृति की प्रतीक, अब कहाँ गए संस्कार?
गौ माता अन्नपूर्णा.....

भटके गली–गली ये मारी, घर–घर दुत्कारी जाय
घुट–घुट जाएँ साँसें इसकी, पन्नी–प्लास्टिक खाय
ऐंठन लगे उदर जब इसका, कहाँ मिले उपचार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

टेम्पों में रेवड़–सी भरकर भेजी, छोड़ी जाए
साफ–सफाई इन्हें है प्यारी गंद तनिक न सुहाय
भव–पालक की प्यारी गैय्या कलियुग में लाचार
गौ माता अन्नपूर्णा.....

अंग्रेजों की नीति को अब तक समझ न पाय
अर्थतंत्र की रीढ़ को, जाते क्यों चटकाय
अब तो जागो भारतवासी, गैय्या रही पुकार
गौ माता अन्नपूर्णा, जीवन का आधार

लोक संस्कृति में बालिकाओं का पर्व - संजा

डॉ. शारदा मेहता
स्वतंत्र लेखन
ऋषिनगर विस्तार,
उज्जैन (म.प्र.)

अविवाहित बालिकाओं का लोक कला पर्व संजा भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व रखता है। यह एक आँचलिक पर्व है, जिसे भारत के कुछ प्रान्तों में ही मनाया जाता है जैसे मालवा, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात। इन प्रान्तों में इसे भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है। सांझी धूंधा, संजा गुजरी, सभन्या, संजा गुजरी आदि विभिन्न प्रदेशों के नाम हैं। महाराष्ट्र से इसे बुलाबाई या भुलाबाई के नाम से पहचाना जाता है। सामान्यतः मालवा क्षेत्र में इस पर्व को श्राद्ध पक्ष की पूर्णिमा से अमावस्या तक सोलह दिन तक कन्याएँ विशेष उत्साह से मनाती हैं।

संजा बई घर की बहिन बेटी का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी मान्यता है कि श्राद्ध पक्ष में वह पीहर आती है और अपनी सखी सहेलियों के साथ इस पर्व में सम्मिलित होती हैं। संध्या के समय घर के बाहर की दीवार पर गोबर से चौकोर लीप कर गोबर से ही विभिन्न आकृतियाँ तिथि के अनुसार बनाई जाती हैं। उन आकृतियों पर इस मौसम में विशेष रूप से खिलने वाले गुलतेबड़ी, चाँदनी, हारसिंगार, पीले कनेर आदि पुष्पों को चिपकाया जाता है।

सोलह दिन की अलग–अलग आकृतियाँ होती हैं। चाँद सूरज, पाँच पांचे, डोकरा– डोकरी, बैल गाड़ी, सात पंखड़ियों का फूल, पूनम पाटला, पंखा, घेवर, स्वस्तिक, चौपड़, केले का पेड़, मोर बन्दनवार आदि। एकादशी से अमावस्या तक किला कोट का निर्माण किया जाता है। चमकीली पन्नियों को चिपकाकर सजाया जाता है। इसमें जाड़ी जसोदा, पतली पेमा, ढोली, सोन चिरैया, संजा बाई के आभूषण, वस्त्र, बैलगाड़ी आदि आकृतियाँ बनाई जाती हैं। प्रतिदिन सायंकाल पूजन करके आरती गायी जाती है और प्रसाद वितरण किया जाता है।

संजा बाई के पूजन के पश्चात विभिन्न गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में मनोरंजन के साथ ही ससुराल पीहर के संबंधियों के व्यवहार के प्रति उलाहने होते हैं। सभी सखी सहेलियाँ लय बद्धरूप से इन गीतों को गाती हैं। गीतों के निम्नलिखित उदाहरण देखिए–

१. संजा बई का लाड़ा जी लुगड़ो लाया जाड़ा जी।
२. खीर खिलाई मामा ने मामा ने दिया पैसा।
३. संजा तू बड़े बाप की बेटी। तू खाय खाजा रोटी।
४. छोटी सी गाढ़ी लुढ़कती जाय जी में बैठा संजा बई घाघरो धमकाती जाय चूड़लो चमकाती जाय।
५. चाँद गयो गुजरात कि हिरणी का बड़ा बड़ा दाँत के छोरा छोरी डरपेगा डरपेगा।
६. संजा तू थारे घर जा कि थारी माँ मारेगी कि कूटेगी।
७. काजल टीकी लो बई काजल टीकी लो, काजल टीकी लईने म्हारी संजा बई के दो।

संजा की आरती के समय बालिकाएँ गातीं हैं–

संजा तू जीम ले चूठ ले, मैं जिमाऊँ सारी रात फूलाँ भरी रे परात।
पेली आरती पेली आरती रई रमझोल.....
राजस्थान का यह संजा गीत प्रसिद्ध है–
संजा को पीअर सांगानेर
परण् पधार्या गढ़ अजमेर।

महाराष्ट्र में बुला बाई या भुलाबाई का गाना गाया जाता है जो इस प्रकार है–

१. इड़कित जउ खिड़कित जउ खिड़कित ठेवला साबू,
बुला बई चे बाळा चा नाव ठेऊ बाबू।
२. इड़कित जउ खिड़कित जड़ खिड़कित ठेवली सुपारी,
बुला बाई चे बाळा चा नाव ठेऊ दुपारी।।

इस प्रकार सोलह दिन तक यह पर्व मनाया जाता है। सोलवें दिन सायंकाल में दीवार पर बनी आकृतियाँ निकाल कर एक डलिया में संग्रहित करके नदी, तालाब, बावड़ी या कुएँ में विसर्जित कर दिया जाता है। सभी सहेलियां बड़ी उदास हो जाती है। यह पर्व बालिकाओं के लिए शिक्षा प्रद भी है। ससुराल के नए वातावरण में रहना, धैर्य धारण करना और सहनशीलता रखना इस पर्व से उन्हें सीखने को प्राप्त होता है।

अविवाहित कन्याओं का विवाह होने पर उसी वर्ष इस पर्व का उद्यापन करना होता है। उद्यापन में सोलह कन्याओं को भोजन कराया जाता है। प्रत्येक को बाँस की छाबड़ी या स्टील की कटोरियों में प्रसाद रख कर दिया जाता है।

महानगरों में यह प्रथा तो प्रायरू समाप्त ही है। नगरों में भी कहीं–कहीं संजाबाई दीवार पर बनी दिखलाई देती है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं ने इस प्रथा को अभी भी जीवित रखा है। अविवाहित कन्याएँ बड़े मनोयोग से इसे सम्पन्न करती हैं।

वर्तमान युग में पक्के मकान हो गए हैं। उन पर प्लास्टिक पेन्ट किया हुआ होता है। दीवार पर संजा बनाना असंभव होता है। आजकल बाजार में रंगीन कागजों से बनी हुई संजा विक्रय हेतु उपलब्ध है जिन्हें खरीद कर बालिकाएँ दीवार पर लगा कर संजा पूजन सम्पन्न कर देती हैं।

संजा पर्व हमारी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है। हमारी माता बहनों को चाहिए कि वे इस कलापर्व को किसी न किसी रूप में जीवित रखें। छोटी अविवाहित कन्याओं से किसी कार्ड बोर्ड पर या हार्ड बोर्ड पर सोलह दिन बनाए जाने वाली आकृतियाँ बनवाएँ और सोलहवें दिन इसे विसर्जित करवा दें। गोबर न हो तो बाजार में उपलब्ध साफ्ट क्ले या वाल पुट्टी का प्रयोग करें। इससे बालिकाओं में मांडना कला की रुचि जागृत होगी और ज्यामितीय आकृतियाँ समझ सकेंगी यथा– सरल रेखा, वक्र रेखा, वृत्त, त्रिकोण, चतुर्भुज आदि। विभिन्न रंगों के वाटर कलर का उपयोग भी इन आकृतियों की आकर्षित निर्मिति के लिए किया जा सकता है तथा समयानुकूल नए प्रकार के गीतों का सृजन कर उन्हें गाया जा सकता है।

वर्तमान में अधिकांश घरों की बालिकाएँ उच्च अध्ययन के लिए या नौकरी के लिए दूरस्थ शहरों में निवास करती हैं। अतः ऐसी बालिकाएँ जो अभी छोटी हैं वे इस कार्य को सहर्ष स्वीकार कर उत्साह से सम्पन्न करेंगी।

सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण

प्रबंधकीय तकनीकों और कार्य संस्कृति के प्रति निष्ठा का परिणाम

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

भावनात्मक सम्बन्धों की पृष्ठभूमि : सामान्य जीवन में जितने भी कार्य व्यक्ति के माध्यम से किये जाते है प्रायः उनका सम्बन्ध किसी न किसी रूप में एक–दूसरे से जुड़ना होता हैं। अब चाहे व्यावहारिक जगत् में कार्य करते हुये अथवा किसी परिस्थितिवश आपसी सम्बन्धों का निर्माण होता है तो उसे भावनात्मक रूप से मानवीय सम्बन्धों के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिये। कार्य व्यवहार के अंतर्गत् प्रायः स्वयं के कार्य करने की स्थिति और उपलब्ध साधनों से हम संतुष्ट नहीं हो पाते हैं। इस स्थिति में अपने साथ दूसरे व्यक्तियों को मिली हुई सुविधाओं से तुलना करते हुए अपने सामान्य सम्बन्धों में कहीं न कहीं हीन भावना को स्थान दे बैठते हैं जिसके परिणामस्वरूप आपसी सम्बन्धों में कड़वाहट आ जाती है। यह भी देखा गया है कि कार्य व्यवहार के अन्तर्गत् एक–दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ने की चाह सभी व्यक्तियों में होती है परन्तु यह भाव दीर्घ काल तक नहीं रह पाता है। अतः धीरे–धीरे आपस में दूरियाँ बढ़ती चली जाती हैं और दूसरे व्यक्तियों के लिये अच्छा कहने की आदत कम होने लगती है। कई बार यह मन में आता है कि सामने वाले व्यक्ति के बारे में सकारात्मक भाव रखते हुए उसे आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जाये, लेकिन मन में यह डर बना रहता है कि कहीं मेरा स्थान कम न हो जाये। हम चाहें या न चाहें यदि किसी को आगे बढ़ना है तो वह स्वयं ही आगे बढ़ जायेगा अथवा उसके पक्ष में उसका भाग्य और समय दोनों साथ देने

लगेगें। इस प्रकार हमारे पास केवल एक ही आधार शेष रह जाता है कि हम हमेशा दूसरों को आगे बढ़ाने में मदद्गार बनें क्योंकि ऐसा सकारात्मक प्रयास करने से अंततः हम स्वयं ही आगे बढ़ जाते हैं।

सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण : मानवीय सम्बन्धों को समझने के लिये जिन व्यावहारिक स्थितियों को गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता है उसके अन्तर्गत् आपस में सम्बन्ध स्थापित करने हेतु महत्वपूर्ण तकनीकों को अपनाना होगा। मनुष्य होने के नाते जब एक–दूसरे के साथ सम्बन्ध बन जायेगें तो यह आवश्यक नहीं है कि इनकी उपस्थिति सदा ही सकारात्मक भाव से गतिशील रहे।

यदि किसी कारण से इसमें दरार पैदा होती है अथवा कोई विवाद उत्पन्न होता है तो उस समय कैसे विवाद से बाहर निकला जाये या आखिर इस विवाद के निवारण की प्रमुख तकनीकें क्या हैं, यह जानने का प्रयास करना होगा। मानवीय सम्बन्धों को मधुर बनाने में संवाद की अहम् भूमिका होती है अब चाहे यह बातचीत स्वयं के साथ अथवा परिवार, सम्बन्धियों, समाज एवं कार्य के अन्तर्गत् सम्मिलित समूहों के संदर्भ में ही क्यों न हो? ऐसी स्थिति में सामाजिक ताने–बाने के मध्य सही सामन्जस्य स्थापित करने हेतु प्रभावशाली संप्रेषण कला का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और इसके लिये सभी व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से अपने–अपने स्तर पर प्रयास करते रहते हैं। संस्थान में कार्य के अन्तर्गत् मानवीय सम्बन्धों को बनाये रखने हेतु तथा उनके व्यावहारिक पहलुओं को विस्तार से समझने के लिए विभिन्न प्रबन्धकीय तकनीकों का क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन किया जाना चाहिये। इस प्रकार जीवन में आपसी सम्बन्धों के वास्तविक रहस्यों को समझते हुए, संस्थान में सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करने हेतु व्यवस्थागत् परिवेश में मानवीय सम्बन्धों के साथ–साथ विवाद निवारण, प्रभावशाली सम्प्रेषण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, तनाव प्रबन्धन तथा समस्या समाधान एवं निर्णय निर्माण की प्रक्रिया का प्रयोग अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास हेतु किया जाना चाहिये।

मानवीय सम्बन्धों के अनिवार्य तत्व : सामान्यतः जीवन में मानवीय सम्बन्धों को बनाये रखने का प्रयास सभी व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। कई बार व्यक्तिगत् या समूहगत् कार्य करते हुये यह विचार मन में उठता है कि स्वयं के द्वारा सभी स्थितियों में सकारात्मक प्रयास किया जाये तो निश्चित तौर पर आपसी सम्बन्धों को मधुर बनाया जा सकता है। हालाँकि हम सभी चाहते हैं कि नम्रतापूर्वक व्यवहार होना चाहिये लेकिन ऐसा नहीं हो पाता क्योंकि इस स्थिति को समाज कहीं न कहीं हमारी कमजोरी मान लेता है। हमारे मन में दूसरों के प्रति आन्तरिक जुड़ाव का अनुभव निश्चित रूप से स्वयं को प्रेम के पथ पर चलने हेतु प्रेरित करता है। आपसी सम्बन्धों में मधुरता की बात किसी दूसरे व्यक्ति से करने की बजाये अपने आप से करना चाहिये। जीवन की गतिशीलता में मानवीय सम्बन्ध बनाने की पहल सर्वप्रथम परिवार से प्रारंभ होते हुए समाज तक पहुंचती है।

विवाद निवारण और आवश्यक उपाय : व्यक्तिगत् जीवन में जब कोई विवाद की बात करता है तो ऐसा लगता है कि इस बात का हमारे व्यवहार से कोई लेना देना नहीं है। वास्तविक अर्थों में यह बात हमारे अंतःकरण में रहती हैं जिसे हम कभी प्रकट नहीं करते और कुल मिलाकर यदि यह कहा जाये कि कभी विवाद करते ही नहीं हैं, तो शायद यह उचित होगा। आज हमारे द्वारा कितने भी तर्क –वितर्क कर लिये जायें उसमें किसी न किसी रूप में हमारे भीतर की सही बात सामने वाले व्यक्ति को पता चल ही जाती है। किसी बात का दावा करना अलग स्थिति है और सच्चाई को स्वीकार करना एक अलग बात है, भले ही हम चाहें अथवा न चाहें मनुष्य की प्रवृत्ति विवादों से परे नहीं है। सामान्य व्यवहार में अगर कभी किसी विवाद की स्थिति निर्मित भी हो जाये तो इसे अपवाद का रूप मानकर उसके निवारण हेतु प्रयास करना चाहिये। अपने भीतर चलने वाले विवाद को प्रायः हम स्वीकार कर लेते हैं और चुपचाप उसके निवारण हेतु व्यक्तिगत् स्तर पर कोई न कोई उपाय ढूढ़ते रहते हैं।

प्रभावशाली सम्प्रेषण के लिये महत्वपूर्ण पहल : वर्तमान प्रतियोगिता के युग में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो अच्छी बातचीत करने के लिये लालायित नहीं हो लेकिन ऐसा कर पाना इतना सहज नहीं होता जितना कि समझा जाता है। यहाँ पर महत्वपूर्ण बात यह है कि आखिर हर आदमी अच्छा क्यों बोलना अथवा सुनना चाहता है? इस बात का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि सही बातचीत वास्तविक अर्थों में प्रभावशाली सम्प्रेषण कला का महत्वपूर्ण आधार होती है। क्या जीवन में इस सिद्धांत का पालन किया जा सकता है जिसमें कहा गया है कि ''बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो और बुरा मत देखो'' सच्चाई यह है कि प्रयास करने पर इसका अनुपालन किया जा सकता है। प्रभावशाली सम्प्रेषण कला के माध्यम से सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति सकारात्मक सोचना प्रारम्भ कर देता है क्योंकि उसके मन में हमेशा यह ख्याल बना रहता है कि मुझे अच्छा बोलना है।

किसी भी बातचीत का उद्देश्य यह होता है कि जो कुछ भी कहा जा रहा है उसे उसी अर्थ में सामने वाले व्यक्ति द्वारा समझा जाना चाहिये।

उपलब्धि अभिप्रेरणा और उपयुक्त प्रयास : किसी भी व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त हो जाये यह बात कुछ समय तक उसे अच्छी लगती है किन्तु इसके अतिरिक्त वह किसी अन्य खोज में मन ही मन लगा रहता है। सामान्य दृष्टि में ऐसा लगता है कि व्यक्ति अपनी सफलता से खुश क्यों नहीं है लेकिन इसकी गहराई में जाने पर पता चलता है कि व्यक्ति के द्वारा कुछ और पाने की इच्छा किसी न किसी रूप से समाज में प्रकट होती रहती है। इस प्रकार व्यक्ति के द्वारा केवल सफलता प्राप्त कर लेना और इस सफलता से संतुष्ट हो कर बैठ जाना यहीं तक सबकुछ सीमित नहीं रह गया है इसके अलावा भी वह कुछ चाहता है। ऐसी कौन–सी बात व्यक्ति के अंदर है और वह उसे प्रकट नहीं कर पा रहा है इस बात का पता लगाने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति के द्वारा सफलता के अतिरिक्त उपलब्धि का आँकलन जीवन के संदर्भ में कर लिया गया है। जीवन की विभिन्न मान्यताओं के अंतर्गत् यह सत्य प्रकट हो जाता है कि व्यक्ति अन्ततः यदि किसी उपलब्धि

को हासिल करना चाहता है तो उसे किसी न किसी प्रकार से महत्वाकांक्षी होना ही पड़ेगा। मनुष्य की प्रगतिशील विचारधारा इस बात का बहुत खुले रूप से समर्थन करती है जिसमें यह कहा गया है कि ''महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में पलता है।'' अतः जीवन में उपलब्धि अभिप्रेरणा हेतु सतत् प्रयास किया जाये तो निश्चित तौर पर व्यक्ति सफलता की सीढ़ी से कदम बढ़ाते हुए अपने मूलभूत लक्ष्य ''उपलब्धि'' को प्राप्त कर सकता है।

जीवन में तनाव प्रबन्धन की तकनीक : इस जगत् में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो अपने जीवन में तनावमुक्त न रहना चाहता हो। तनाव से मुक्ति हेतु प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने-अपने स्तर पर विभिन्न प्रकार के प्रयास यदा-कदा किये भी गये होगें। सामान्यतः तनाव के सम्बन्ध में यह मान्यता समाज में बनती जा रहीं है कि तनाव को किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं किया जा सकता है। विभिन्न अध्ययन यह बताते हैं कि जीवन में विकास के जितने भी आयाम है उनकी पूर्णता बिना तनाव के संभव नहीं हो सकती है।

किसी भी कार्य के लिये जब व्यक्तिगत् अथवा सामूहिक प्रयास किया जाता है तो उसके अन्तर्गत् तनाव का होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इस प्रकार एक बात स्पष्ट हो जाती है कि मनुष्य तनाव से किसी भी स्थिति अथवा परिस्थिति में मुक्त नहीं हो सकता केवल तनाव के स्तर को कम किया जा सकता है। जीवन के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि तनाव किसी भी संदर्भ अथवा प्रसंग का हो उसके लिये सकारात्मक एवं नकारात्मक स्थितियों का विभाजन किया जाना पर्याप्त होगा। अब यह हमारी समझ की स्थिति पर निर्भर है कि हम सकारात्मक तनाव को कितनी समयावधि के लिये स्वीकार करते हैं और उसका उपयोग किस प्रकार करते हैं।

समस्या समाधान एवं निर्णय निर्माण की प्रक्रिया : आज सभी व्यक्तियों एवं समूहों के द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि आखिर जीवन अथवा कार्य के अन्तर्गत् उत्पन्न होने वाली समस्या का समाधान क्या है। जब कभी कोई समस्या हमारे समक्ष प्रकट होती है तो ऐसा लगता है कि अब क्या करें? क्योंकि इसके पहले भी कई समस्याएँ पैदा हुई थीं और उनका समाधान किया गया, फिर एक नई समस्या का खड़ा हो जाना स्वयं को आश्चर्य चकित कर देता है। हालाँकि समस्याओं के ऊहापोह से व्यक्तिगत् स्तर पर जीवन जीना दूभर हो गया है लेकिन कई बार यह समझ में ही नहीं आता कि आखिर क्या करें? ऐसा नहीं है कि दुनिया में हमारे पास ही समस्याएँ हैं, विभिन्न मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताते हैं कि लगभग यही स्थिति सभी व्यक्तियों के साथ किसी न किसी रूप में बनी हुई है। किसी भी समस्या के समाधान के लिये हमारे भीतर एक-दूसरे को सुनने एवं समझने की शक्ति होनी चाहिये। जब हम समस्याओं के समाधान हेतु उचित माध्यम की तलाश करते हैं तो हमारे सामने आपस में संवाद करना सबसे उचित विकल्प होता है। समस्या समाधान हेतु सबसे पहले यह पता लगाना आवश्यक है कि आखिर समस्या कहाँ से उत्पन्न हुई है और समाधान हेतु हमारे पास विभिन्न विकल्प कौन से मौजूद हैं ताकि सही विकल्प का चयन किया जा सके। इस प्रक्रिया के पश्चात् ही निर्णय निर्माण का कार्य आरम्भ होता है जिसके अन्तर्गत् उचित निर्णय की पहल की जाती है।

अन्तःकरण की सहजता का विकास : जीवन में मानवीय सम्बन्धों का महत्व पुरातन काल से चला आ रहा है। हम सभी इस बात को आज पूर्णतः स्वीकार कर चुके हैं कि आपसी सम्बन्धों के अन्तर्गत् सकारात्मक दृष्टिकोंण का होना आवश्यक है। मनुष्य होने के नाते एक-दूसरे व्यक्तियों से जुड़े रहना हमारे जीवन की एक अनिवार्य क्रिया है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु एक-दूसरे से सहारे की उम्मीद करना और जरूरत पड़ने पर मदद् के लिये तत्पर हो जाना एक स्वाभाविक व्यवहार है। कई बार ऐसा लगता है कि जो कुछ मैं सोच रहा हूँ वह सब ठीक है लेकिन मन कहता है कि यही बात सामने वाला व्यक्ति भी यदि सोच रहा हो तो मुझे क्या करना चाहिये। इन सब बातों पर यदि ध्यान दिया जाये तो लगता है कि हमें दूसरे व्यक्तियों के बारे में अपनी सामान्य समझ विकसित कर लेना चाहिये। अगर स्वयं के साथ अन्य लोगों की भावनाओं का सम्मान किया जाये तो इसमें कुछ सीखने को ही मिलेगा, हालाँकि यह इतना आसान नहीं है, जितना कि सामान्य रूप से इस रहस्यमय स्थिति को समझने का प्रयास किया जाता है। मानवीय सम्बन्धों को समझने पर यह ज्ञात हो जाता है कि सबसे पहले अपने भीतर सहजता विकसित करनी होगी जिससे कि जुड़ाव की अनुभूति संभव हो सके।

सकारात्मक व्यवहार की उपस्थिति : विभिन्न कार्यों के अन्तर्गत् मानवीय सम्बन्धों की सौहार्दपूर्ण स्थिति संस्थान के वातावरण को अनुकूल बनाये रखने में सहायक होती है, जिसके परिदृश्य में प्रबन्धकीय तकनीकों का योगदान अपनी अहम् भूमिका निभाता है। एक-दूसरे से व्यवहार करते समय यह देखना आवश्यक हो जाता है कि हमारे किसी व्यवहार से सामने वाले व्यक्ति को किसी भी प्रकार का दुःख तो नहीं पहुँच रहा है। सामान्यतः बिना किसी को कष्ट पहुँचाये हम अपना सम्पूर्ण कार्य करना चाहते हैं लेकिन यह संभव नहीं हो पाता है। मानवीय संवेदनाओं को समझने वाले लोग अपना व्यवहार करते समय स्वयं के ऊपर निगरानी रखने का प्रयास करते हैं और वे अधिकतर स्थितियों में सफल भी हो जाते हैं। यह आम धारणा है कि यदि हम छोटी-छोटी बातों को गंभीरता से समझने का प्रयास करें तो जीवन में आने वाली कई कठिनाईयों से स्वयं की रक्षा कर सकते हैं। ऐसा नहीं है कि सकारात्मक सम्बन्धों की गहराई को हम समझते नहीं हैं लेकिन जीवन के व्यवहार में प्रायः इसका उपयोग करने से कहीं न कहीं हमसे चूक हो जाया करती है। केवल व्यक्तिगत् जीवन के प्रति एक सजीव आस्था का जन्म हो जाये और उसे हमारा मन स्वीकार कर ले तो निश्चित तौर पर हमारे अच्छे व्यवहार को कोई भी व्यक्ति चुनौती नहीं दे सकता। छोटी-छोटी परिस्थितियाँ यदि हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व को डिगा देती हैं तो हमारे जीवन में भी कार्य करने का उत्साह नहीं होगा और बिना उमंग के आनंद की कल्पना क्या संभव हो सकती है?

कलयुगी विभीषण

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक

प्रेम बाबू का बड़ा बेटा हरिनाथ शहर में अफसर के पद पर तो छोटा बेटा रामनाथ सामाजिक कार्यों से अपने कुल परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे थे। पुरानी जमींदारी के नाते क्षेत्र में उनके परिवार का रुतबा भी खूब था। प्रेम बाबू के अकूत संपत्ति और उनके परिवार की एकता से उनके विरोधी खूब ईर्ष्या करते और अक्सर उनके परिवार में फूट डालने की योजना बनाते और हर बार नाकामयाब भी रहते।

प्रेम बाबू के स्वर्गवास के बाद आये दिन उनके दोनों बेटों में छोटी–छोटी बातों पर कहासुनी और मनमुटाव सा होने लगा, जिसकी भनक प्रेम बाबू के विरोधियों को लगी। उनके विरोधी इस मनमुटाव को उचित अवसर में तब्दील करने के लिए दोनों भाइयों के बीच फूट डालने की योजना में लग गए। चूँकि, हरिनाथ नौकरी के कारण ज्यादातर शहर में रहते थे और गाँव के माहौल से उतनी अच्छी तरह से वाफिक नहीं थे। हरिनाथ के इसी कमजोरी का फायदा उठा प्रेम बाबू के विरोधी उन्हें रामनाथ के खिलाफ भड़काने लगे और हर छोटी–मोटी बातों पर कोर्ट कचहरी जाने के लिए उकसाने लगे। हरिनाथ को भी उनकी बातें प्रिय लगने लगी और वह हर मामले में रामनाथ को कोर्ट कचहरी में घसीटने लगा। हरिनाथ के इस कृत्य पर उसके परिवार और रिश्तेदारों ने खूब समझाया पर हरिनाथ ने उनकी बातें दरकिनार करते हुए अपना ये कृत्य बरकरार रखा।

एक पुरानी कहावत है कि, 'जिस घर के सदस्यों को अपनो से ज्यादा बाहरी प्रिय लगने लगे, समझ लेना उस घर की बर्बादी निश्चित हैं।' यहाँ भी ये कहावत चरितार्थ हुई। पहले जो लोग हरीनाथ को रामनाथ के खिलाफ भड़काते थे अब वही लोग धीरे–धीरे प्रेम बाबू की संपत्ति को हड़पने लगे। रामनाथ जब विरोध करता तो उसके विपक्षी कहते– 'यह हमारे दोस्त हरिनाथ की भी संपत्ति हैं, अकेले तुम्हारी नहीं है।'

हरिनाथ भी लोगों के खास बनने के चक्कर में चुप्पी साधे अपनी पैतृक संपत्ति गवाता रहा और प्रेमबाबू के विरोधी उनके बेटों के इस झगड़ों का लाभ उठाकर उनकी संपत्तियों पर कब्जा करते रहे। उधर प्रेमबाबू के दोनों बेटे सुकून और सम्मान की जिंदगी छोड़, आए दिन कोर्ट–कचहरी के चक्कर लगाने लगे।

एक दिन सब कुछ गंवा देने के बाद हरिनाथ को भी ठगे जाने का अहसास हुआ और उसने एक रिश्तेदार से कहा– 'मुझे आज महसूस हो रहा है कि विरोधियों के बहकावे में आकर मैंने बाबू जी (प्रेमबाबू) के सम्मान और संपत्ति को मिट्टी में मिला दिया।'

'हरि (हरिनाथ), हम तो शुरू में ही कृष्ण बनके संधि का पैगाम लाये थे जिससे तुम दोनों भाइयों में महाभारत जैसी कोई अप्रिय घटना ना हो। परन्तु, उस समय तुमने कलयुगी विभीषण बनके राम (रामनाथ) का साथ नहीं बल्कि रावण (प्रेम बाबू के विरोधियों) का साथ चुना।'– हरिनाथ के रिश्तेदार ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

हरिनाथ ने भी अपने किये पर पछतावा हुआ और उसने अगली सुबह गीले–शिकवे भुलाकर अपने भाई रामनाथ को गले लगाने का निश्चय किया।